आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022



# शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 05 | उदयपुर रविवार 15 मार्च 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

# लाख-लाख के लाखेणी आभूषण

-डॉ. कहानी भानावत-

**भारत में बबूल, बेर, कुसुम, पलाश, घोंट, खैर, पीपल, गूलर, पकरी, पुतकल, आम, साल, शीशम, अंजीर आदि वृक्ष लाख कीट के पोषक हैं। खैर, कुसुम और बबूल के वृक्षों पर पले कीटों से उत्तम प्रकार का लाख बनता है। पलाश और बैर पर एक विशेष प्रकार के लाख का उत्पादन होता है जिसे 'कुसुमी लाख' कहते हैं।**

लाख कीट एक रेंगने वाला छोटा कीड़ा है जो अपने चूसक मुखांग को पौधों के ऊतकों में घुसाकर रस चूसता है। आकार में बढ़ता है और अपने पिछले भाग से लाख का स्राव करता है। इसका शरीर ही अन्त में लाख के कोष्ठ में बन्द हो जाता है। वास्तव में लाख कीट की सुरक्षा के लिए होता है, न कि भोजन के लिए। मादा द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए तथा नर चमकीले क्रीम रंग का लाख स्रवित करता है। मादा नर से बड़ी चार से पांच मिलीमीटर लम्बी होती है। उसका शरीर लाख के बने एक कोष्ठ में बन्द रहता है। उसका जीवन काल नर से लम्बा होता है जो जीवन भर लाख का स्राव करती रहती है।

भारत में बबूल, बेर, कुसुम, पलाश, घोंट, खैर, पीपल, गूलर, पकरी, पुतकल, आम, साल, शीशम, अंजीर आदि वृक्ष लाख कीट के पोषक हैं। खैर, कुसुम और बबूल के वृक्षों पर पले कीटों से उत्तम प्रकार का लाख बनता है। पलाश और बैर पर एक विशेष प्रकार के लाख का उत्पादन होता है जिसे 'कुसुमी लाख' कहते हैं।

लाख का उत्पादन एक जटिल प्रक्रिया है। पहला चरण कीट का संरोपण है जिसके द्वारा तरुण कीट पौधे पर भलीभांति व्यवस्थित हो जाता है। कीट पर लाख का आवरण चढ़ना या लाख का स्रवण होना वृंदन कहलाता है। जब लाख पूरी तरह परिपक्व हो जाता है तब प्राप्त कर लिया जाता है। इसका कुछ भाग पौधे पर ही छोड़ दिया जाता है। जिस शाखा पर कीट और अण्डे रहते हैं उसे लाख भ्रूण टहनी कहते हैं। इस लाख को भ्रूण लाख या टहनी लाख कहते हैं। भ्रूण लाख को टहनी से खुरच कर छुड़ाते हैं। खुरचे हुए लाख में अनेक अशुद्धियां जैसे लाख कीट के मृत भाग, अण्डे, रंजक आदि होते हैं। इसे खरल द्वारा कूटा जाता है और हवा में सूखाकर कणों के रूप में प्राप्त कर लिया जाता है। इसे बीज लाख कहते हैं।

बीज लाख को पानी में भिगोकर, धोकर, धूप में सुखाकर, रंग उड़ाकर, कपड़े के थैलों में भरकर, आग की आंच के ऊपर लटकाकर पिघलाते हैं। गर्म करते समय थैलों को घुमाते रहते हैं जिससे लाख निचुड़कर बाहर आ जाता है। लाख की अशुद्धियां थैले में ही रह जाती हैं। इन्हें किर्री लाख कहते हैं। निचोड़े हुए लाख को बटननुमा ढांचों के चारों ओर ठण्डा करके जमने देते हैं। इन्हें बटन लाख या शुद्ध लाख कहते हैं।

इसे पतली चादर पर फैला देते हैं तब चादर लाख या पत्तर लाख कहते हैं। पत्तर को जब पानी में घोलते हैं तब सफेद या नारंगी रंग का लाख बनता है। इसे लाख कहते हैं। शल्क लाख ही लाख का शुद्ध रूप है। कुसुमी लाख सर्वश्रेष्ठ लाख माना जाता है।

ढाक का लाख सबसे सस्ता और निम्नस्तर का होता है। तेज प्रकाश, तेज वायु, उच्च तापमान, अधिक नमी, भारी वर्षा, गिलहरी, चूहे, बन्दर, परभक्षी पक्षी और जंतु, परजीवी जीव आदि लाख के कीट और लाख को हानि पहुंचाने वाले कारक हैं।

भारत में प्राचीनकाल से ही विविध रूपों में लाख का उपयोग होता आया है। लाख की चूड़ियां कंगन, पाटले तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं बनाने की कला में राजस्थान का बड़ा नाम है। पोत और नगों से जड़ित हाथी, टेबल लैम्प, मोर तथा लाख की अन्य कलाकृतियों के अलावा लाख के चूड़े, कड़े, पाटले, बंगड़ी, पहुंची, गले का हार तथा नाक एवं कान के गहने बनाने में यहां के कारीगर सिद्धहस्त हैं। चूड़े भी कई

प्रकार के होते हैं। यथा- चन्दरबाई का चूड़ा, बन्द बंगड़ी का चूड़ा, लाल मूंठ्या, मेथी का मूंठ्या, हीरे का, लाल फुरली और पात का चूड़ा। इसी प्रकार लाख के कड़े और पाटले भी कई प्रकार के होते हैं।

लाख की कलाकृतियां बनाने के लिए कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। सबसे पहले लाख की सफाई की जाती है। कपड़े की थैलियों में भर कर उसे गर्म कर असली लाख

निकाली जाती है। पानी डाल-डालकर और कूट-कूटकर उसमें कपड़े रंगने के रंग मिलाये जाते हैं। मिरगान, चमकी, पेवड़ी, मेसल, हरताल के रंग बनाकर उन्हें चटख बनाया जाता है। लाख में चपड़ी, बेरजा और सोपस्टोन मिलाकर लाख की छड़ बनाई जाती है तथा जितने रंग मिलाने होते हैं उसके लिए ऊपर से रंगों की बानी चढ़ाई जाती है। इस छड़ को गर्म कर हत्थे से बेलकर चूड़ियां और कड़े बनाये जाते हैं। लकड़ी की खाली से चूड़ी की शक्ल और लकड़ी के शैल से चूड़ी की साइज तैयार की जाती है।

इनमें कंगन खासे चर्चित हैं। इनकी मांग आदिवासी अंचलों से लेकर दूर-दूर तक बनी हुई है। लखारा समाज के लोग अपनी दुकानों पर परिवार सहित लाख की चूड़ियों के निर्माण में दिन-रात भिड़े रहते हैं। चूड़ियों का महत्व करवा चौथ, दीपावली तथा मांगलिक कार्यों में बहुत अधिक रहता है। मेहरून, कत्थई, सफेद, लाल व चटकी रंग की चूड़ियों की मांग ज्यादा रहती है। कंगनों की कई प्रकार की वैरायटियां बाजारों में उपलब्ध हैं। पक्के नग वाली चूड़ी को शहरवासी अधिक पसंद करते हैं। आदिवासी युवतियों व महिलाओं में खाचमुठिया (बाजू में पहनने वाली चूड़ी) के प्रति लगाव रहता है। इसके अलावा 6.8 एवं 10 नम्बर के कंगन, 2 लेन की पाटली, 3 लेन की गजरी, नवरंगी नग जड़ी चूड़ी व लाख मेटर वाली चूड़ी भी बहुत चलन में है।

लोकगीतों में रंग ढोली अपने रंगरसिया से गहने की झड़ी लगाती फरमाइश करती है-

माथा नै 'मैमद' आओ रंगरसिया
म्हारी 'रखड़ी' रतन जड़ाइदो सा बालमा।
काना रा 'झाल' लाओ रंगरसिया
म्हारे 'झूठणा' झोल दिराद्यो सा बालमा।
बइयां ने 'चुड़लो' लावो रंगरसिया
म्हारे 'चुड़ले' टीम दिराइदो सा बालमा।
पगल्या न 'पायल' लावो रंगरसिया
म्हारी बिंदिया रे 'झूमका' लगाइदो सा बालमा।

मैमद, रखड़ी, झाल, झूठणा, चूड़लो, पायल, झूमका जैसे कितने ही गहनों का इस गीत में जिक्र आता है। 'हरिया बाग' गीत में भी माथा ने मैमद लावो रंगरसिया तथा माताजी के गीतों, विवाह के गीतों और मौके-बेमौके के अनेक गीतों में कामणी अपने प्रिय से गहनों की मांग करती है। सौलह सिंगार में यदि गहने नहीं हों तो सबकी ओपमा अधूरी तथा फीकी रहती है। कुछ गीत पंक्तियां लीजिये-

(क) म्हैं तो पांवां पड़ती आऊं ए म्हारी मां
सोना रा झांझर बाजणां।
(ख) पगल्या ने 'पायल' ढोला,
लावज्जो जी ढोला लावज्यो
ओ म्हारी सूंवटियो..।
(ग) माथा ने 'मैमद' लावो भंवर
म्हारी 'रखड़ी' रतन जड़ावो
भंवर म्हाने पूजण दो गिणगोर।

इसी प्रकार हिवड़ा ने 'हांसज', काना ने 'झाल', 'झूठणा' रे झोल दिलाने की फरमाइश मिलती है। यहां बनड़ी ही नहीं, उसकी घोड़ी भी गहनों से सिणगारी जाती है। बना के लिए भी कहा गया है-

लड़ियां तो थे प्हेरो बनासा डोरां रो अधक बणांव
बागां तो थे प्हेरो बनासा बटनां रो अधक बणांव
मूल्यां तो थे प्हेरो बनासा हेलयां रो अधक बणांव
बना री घोड़ी रमझम करती जाय।

मूल्यां पांवों में पहनी जाने वाली पगरखी का गहना है। कंगा घेरदार कुरता होता है। यह मुगलों की देन है। बागां तो अब कहीं नहीं दिखता है।

राजस्थान में चूड़े का चलन सर्वाधिक है। चूड़ा सधवाएं पहनती हैं। कुंवारी कन्याएं नहीं पहनतीं। विधवाएं तो बिना गहने पहने ही रहती हैं। ब्याह के समय बना बनड़ी के लिए नथ लाता है। नाना-नानी द्वारा बालकों के कर्ण छिदवाने का रिवाज है। पुरुषों के कानों में लोंग तथा मुरकियां पहनने का शौक है। रेबारी पुरुष तो गहनों से लदे ही रहते हैं।

पोथीखाना

# महाप्रज्ञ के जीवन वैशिष्ट्य को उकेरती 'अन्तर्यात्रा एक योगी की'

-प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'-

'अन्तर्यात्रा एक योगी की' तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन को उकेरती एक ऐसी कृति है जिसमें निर्माण के बीज हैं। आस्था के दीप हैं। भक्ति का पैगाम है। विद्या का आलय है। सृजन की गाथा है। अन्तर्मुखता के स्वर हैं। हिमगिरि की उत्तुंगता का संस्पर्ष है। यह एक ऐसे दिव्य पुरूष की दिव्यता की गाथा है, जिसने अपने पुरूषार्थ के प्रदीप्त से अपने भाग्य की रेखा स्वयं लिखी थी।

गुरू तुलसी ने जिस पुरूषार्थी व्यक्तित्व की तीक्ष्ण मेधा का अंकन किया वह एक क्षण में मुनि नथमल से महाप्रज्ञ नहीं बने बल्कि जिनके अन्त:की अनन्त शक्ति का उजास भास्वरित हुआ और उनके पुरूषार्थ की लौ प्रज्ज्वलित हो उठी तब कहीं महाप्रज्ञ का अलंकरण मिला।

यह कृति ऐसे अन्तर्मुखता के धनी व्यक्तितत्व की महागाथा है जिसे उकेरा है उनके ही समर्पित, निष्ठावान शिष्य डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने। अणुव्रत जिनके रोम-रोम में रचा-बसा है। कुछ पारिवारिक परिवेश से तो कुछ अपनी कर्मठता से। काका देवेन्द्र कर्णावट ने आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन को विचार से और प्रसार से विस्तार दिया। इसी विस्तार को जिनके बालमन ने दृष्टि दर्शन किया, महसूस किया और एक दिन स्वयं अपने सशक्त कन्धों पर उस मशाल को लेकर आगे बढ़े। चूंकि लम्बे समय से आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के हर इंगित को आकार देने की कोशिश जिन्होंने की ऐसे डॉ महेन्द्र कर्णावट ने अपनी अनुभूतियों के वातायन से इस कृति को जनबोधगम्य बना दिया।

प्रस्तुत कृति आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन वैशिष्ट्य की सर्जना करती है। यहाँ दीक्षा गुरू कालू गणी के युग में बालमुनि की चपलता और सरलता का अंकन हुआ है तो शिक्षा गुरू तुलसी की छत्रछाया में खिलने का अवसर भी उन्हें मिला। तुलसी बगिया का वह पौधा है जो एक दिन वट वृक्ष बन गया तो तुलसी पाठशाला का वह शिष्य गुरू की गुरूता का ऐसा प्रतिरूप बन गया कि गुरू ने अपना आचार्य पद उसे सौंप निश्चिंत हो गये। ऐसी निश्चिंतता तभी होती है जब व्यक्तित्व की विराटता पर विश्वास हो जाता है। ऐसे ही विश्वास के योग्य अखण्ड व्यक्ति का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ।

उस महापुरूष की महागाथा को कालू युग, तुलसी युग एवं महाप्रज्ञ युग में अभिव्यक्ति देकर उस विराट पुरूष की विराटता का

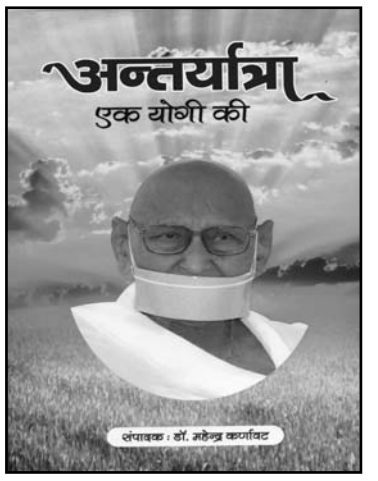


दिग्दर्शन युग को कराने की सफल कोशिश लेखक द्वारा हुई है। इस व्यक्तित्व की महनीयता को उकेरने में लेखक की कल्पनाशीलता का कहीं भी दर्शन नहीं होता है। अगर दर्शन होता है, तो लेखक की यथार्थता का, अनुभविता का और निकटस्थता का। वर्षों वर्ष जिनके समीप रहकर उनके इंगित को आकार देने की कोशिश की भला उन्हें उकेरने में कल्पनाशीलता की कहां जरूरत है?

महाप्रज्ञ के निर्माण से लेकर चिरविश्रान्ति तक की गाथा को लेखक ने 136 आलेखों में इस प्रकार लिपिबद्ध किया है कि प्रत्येक पाठक को पढ़ने का पुरुषार्थ मात्र करना होता है। आगे की उत्सुकता में वह आद्योपान्त कृति का कब पारायण कर लेता है, उसे पता तक नहीं चलता है। यह लेखक की लेखनी का चमत्कार है, जिसने महाप्रज्ञ के जीवन को उकेरने में इतनी सहजता, सरलता और सरसता बरती है कि हर वय का पाठक इस कृति को अपने लिए समझता हुआ प्रतीत होता है। यह लेखक की सफलता भी है और अपने गुरू की अभ्यर्थना का एक नया तरीका भी है।

महाप्रज्ञ की 2001 से 2008 तक सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा का चित्रण इस प्रकार किया है कि लेखक पाठक को भी अपने साथ इस यात्रा का सहयात्री बना रहा हो। कृति का परिशिष्ट बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें महाप्रज्ञ के अहिंसा दर्शन का अनूठा चित्रण है। इसके अन्तर्गत महाप्रज्ञ के अहिंसा चिन्तन को गहरायी देता हुआ अहिंसा के विकास सूत्र, अहिंसा का अर्थशास्त्र, सापेक्ष अर्थशास्त्र का स्वरूप एवं महाप्रज्ञ द्वारा अनुसंधानित अहिंसा प्रशिक्षण की प्रविधि को यथोचित स्थान दिया गया है। महाप्रज्ञ के आशुकवित्व के पठन मात्र से ही आशुकविता के प्रति पाठक की रूचि स्वत: जागृत हो उठती है। महाप्रज्ञ के साहित्य की सूची प्रस्तुत कर लेखक ने महाप्रज्ञ के जीवन-दर्शन पर अनुसंधान करने वालों की स्फुरणा को गति दी है और अन्त में लगभग 22 पृष्ठ में देश के तमाम पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित महाप्रज्ञ के आलेखों की सूची देकर अनुसंधित्सुओं के लिए उपयोगी सन्दर्भ प्रस्तुत किया है।

कुल मिलाकर 336 पृष्ठों में महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी पर उनके जीवन वैशिष्ट्य को प्रस्तुत कर लेखक ने न केवल अपनी सच्ची श्रद्धांजली अर्पित की है अपितु आम जनमानस को उस विराट व्यक्तित्व को पढ़ने, समझने, गुनने और कुछ बनने की प्रेरणा भी दी है। इस सहज, सरल, सरस और बोधगम्य कृति का प्रकाशन गांधी सेवा सदन, राजसमन्द (राज.) से हुआ है। मूल्य का जिक्र पुस्तक में कहीं नहीं है। आवरण पृष्ठ इतना भावपूर्ण आकर्षण लिये है, लगता है महाप्रज्ञ रू-ब-रू हो हमें आशीष दे रहे हैं।

# आयकर पद्धति में नई-पुरानी का झमेला

-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आजादी के बाद सबसे बड़ा बजट भाषण प्रस्तुत किया। वित्त बिल 2020 में सरकार ने करदाताओं को वैकल्पिक कर पद्धति का विकल्प प्रस्तुत किया। सरकार दावा कर रही है कि इससे करदाताओं को 75,000 रूपये तक आयकर का फायदा होगा और यह आयकर सरलीकरण की दिशा मे एक महत्वपूर्ण कदम है। बजट भाषण के बाद करदाताओं के मध्य यह चर्चा का विषय बन गया कि नयी कर पद्धति के विकल्प का उपयोग करना चाहिए या नहीं।

बजट में करदाताओं को दो विकल्प दिए गए हैं। वह चाहे तो पुरानी कर पद्धति के आधार पर आयकर चुकाये या फिर नयी कर पद्धति से। यदि नयी कर पद्धति अपनाता है तो उसे आयकर अधिनियम में उपलब्ध सभी छूटें, कटौतियों, राहत आदि को छोड़ना होगा।

यदि वह पुरानी कर पद्धति को अपनाता है तो 2,50,000 रूपये की छूट मिलेगी और उसकी कुल कर योग्य आय 12,50,000 रुपए होगी। उस पर कर का दायित्व 1,95,000 (पहले 2,50,000 रूपये पर शून्य, अगली 2,50,000 रूपये पर 5 प्रतिशत, अगले 5,00,000 रूपये पर 20 प्रतिशत तथा शेष पर 30 प्रतिशत तथा 4 प्रतिशत सेस) होगा। यदि वह नयी कर पद्धति को अपनाता है तो उसकी कुल कर योग्य आय 15,00,000 रुपए होगी और उसका कर दायित्व भी 1,95,000 रूपये (पहले 2,50,000 रूपये पर शून्य, अगले 2,50,000 रूपये पर 5 प्रतिशत अगले 2,50,000 रूपये पर 10 प्रतिशत, अगली 2,50,000 रूपये 15 प्रतिशत, अगले 2,50,000 रूपये पर 20 प्रतिशत और अगले 2,50,000 रूपये पर 25 प्रतिशत तथा 4 प्रतिशत सेस) होगा।

अब यदि करदाता अपनी निवेश योजना बदलता है और कटौतियॉ, छूटे 2,50,000 रूपये से ज्यादा होती है अर्थात् उसने अपने एवं सीनियर सिटीजन माता पिता के स्वास्थ्य के लिए बीमा करा दिया तो 50,000 रूपये की छूट धारा 80 डी के अंतर्गत बढ़ जाएगी और कुल कटौतियॉ 3,00,000 रूपये हो जाएंगी। ऐसी स्थिति में पुरानी कर पद्धति में उसकी कुल कर योग्य आय 12,00,000 रुपए रह जाएगी। परिणामस्वरूप कर दायित्व 1,95,000 से घटकर 1,79,400 रुपए रह जाएगा। नयी कर पद्धति में कर दायित्व 1,95,000 रूपये ही रहेगा। बेहतर होगा कि वह पुरानी कर पद्धति अपनाएं। इसके विपरीत यदि निवेश कम करने के कारण कटौतियॉ 2,50,000 से घटकर 2,00,000 रह जाएं तो पुरानी कर पद्धति में 2,10,600 रूपये का कर दायित्व होगा जो नयी कर पद्धति में 1,95,000 रूपये कर दायित्व से ज्यादा होगा ऐसी स्थिति में नयी कर पद्धति लाभप्रद रहेगी।

सरकार अर्थव्यवस्था में तेजी लाने के लिए लोगों में उपभोग संस्कृति को बढ़ावा देना चाहती है। इसलिए सरकार ने बजट 2020 में अनेक छूट/कटौतियों को समाप्त करने की कोशिश की। दो तरह की कर पद्धति का विकल्प देकर इसका दायरा उसी तरह संकुचित कर दिया जिस तरह नोटबंदी का निर्णय लेकर 2000 का नोट जारी कर दिया। एक तरह से नई-पुरानी कर पद्धति देकर झमेला ही पैदा कर दिया है।

यदि करदाता की व्यावसायिक आय नहीं है तो उसे प्रत्येक वर्ष यह विकल्प रहेगा कि वह चाहे तो पुरानी कर पद्धति में जाए या फिर नयी कर पद्धति में किंतु कुल आय में व्यावसायिक आय सम्मिलित है तो उन्हें प्रतिवर्ष यह विकल्प उपलब्ध नहीं होगा। एक बार जिस पद्धति को अपना लियाउसे ही हर वर्ष अपनाना होगा किंतु जीवन में एक बार परिवर्तन की छूट रहेगी। इस तरह की व्यवस्थाएं सरकार के निर्णय में डांवाडोल की स्थिति पैदा करती है। सरकार ने ऊहपोह की स्थिति में आयकर प्रणाली को सरल करने की बजाय जटिल बना दिया है।

## किडनी खराब होने का प्रमुख कारण डायबिटीज व हायपरटेंशन : डॉ. गुप्ता

**उदयपुर।** विश्व किडनी दिवस पर पारस जे. के. हॉस्पिटल के किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ. बकुल गुप्ता ने बताया कि भारत में क्रॉनिक किडनी डिजीज (सीकेडी) खराब होने का प्रमुख कारण डायबिटीज व हायपरटेंशन है। इन्टरनेशनल सोसाइटी ऑफ किडनी डिजीज के अनुसार विश्व में 17 प्रतिशत लोगों को किडनी संबधित रोग है। इसका प्रमुख कारण दिनचर्या व खानपान है। डॉ. गुप्ता ने बताया कि सीकेडी रोग की पहचान समय पर हो जाने पर गुर्दे को बचाया जा सकता है। सीकेडी के लक्षणों में लगातार उल्टी आना, भूख नहीं लगना, थकान और कमजोरी महसूस होना, पेशाब की मात्रा कम होना, खुजली की समस्या होना, नींद नहीं आना और मांसपेशियों में खिंचाव होना प्रमुख है। नियमित जांच कराने पर शुरूआत में ही पता चल जाता है और दवा से इसे ठीक करना संभव है।

## हृदय रोग का सफल उपचार

**उदयपुर।** पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने

हृदय रोग का सफल उपचार किया है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि अनवर हुसैन (51) गत दिनों मरीज पेसिफिक अस्पताल, उमरड़ा आया और सीनियर कार्डियक कन्सलटेंट व डायरेक्टर कार्डियोलॉजी डॉ. अमित खंडेलवाल से परामर्श लिया। डॉ. खण्डेलवाल एवं कार्डियक टीम ने मरीज की मुख्य धमनी की जटिल एंजियोप्लास्टी की।

स्मृतियों के शिखर (95) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# ईश्वरीय प्रेरणा से शंकराचार्य लिखा जन्नु भाई ने

**उदयपुर में चार ही महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये। 'वीर विनोद', 'एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान', 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'शंकराचार्य'। विद्यापीठ को बचाने के लिए मुझे राजनीति में जाना पड़ा बाकी मैं राजनीति का व्यक्ति नहीं हूं। मेरे संस्कारों में मेरी मां विजया मां का अश्क है। हमने स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। केवल जेल नहीं गये सो स्वतंत्रता सेनानी नहीं हो सके। मुझे तो पूरे राजस्थान की जनता के मन पर प्रभाव डालने वाला कोई लेखक नहीं दिखाई देता। हम तो हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह समय चाहे मैं नहीं देख पाऊं जब हिन्दी का बोलबाला होगा।**

जीवन में संघर्ष कहां नहीं है? एक नदी की तरह कितने थपेड़ों से गुजरता हुआ जीवन प्रवाहित होता है। जैसे नदी को समुद्र मिलता है उसी तरह मनुष्य को भी भगवत् प्रेरणा मिलती है। मुझे भी मिली एक छोटी सी जिसने 'शंकराचार्य' लिखवाया। साढ़े तेरह वर्ष की तपस्या है शंकराचार्य। दस भागों में सात हजार पृष्ठों पर। किसी को इसकी सुध नहीं। लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

यह कोई 25 जुलाई 1997 का दिन रहा जब मैं जनार्दनराय नागर (जन्नुभाई) के उदयपुर अमल का कांटा निवास पर पहुंचा। मैंने जब-जब भी उनसे भेंट की वे सदैव मुझे ऊर्जावान ही लगे। जब उनकी बैठक में लोग होते तो वे दहाड़मय अपनी उपस्थिति देते मिलते। किसी समारोह में मंचासीन होते तब भी वे मौन रहकर भी मुखर होते या फिर कागज के लम्बे खरड़े पर लिखते मिलते। वे शान्त चुप सन्नाटे में जीने वाले कभी नहीं रहे। जिधर भी बैठते, चलते, बतियाते उनके साथ एक सरसराती, अपनी उपस्थिति देती उफनती एक हवा चलती। उस हवा में एक अजीब निराली गंध होती जैसे किसी शेर के साथ होती है।

अपनी बात जाहिर रखते वे कहते हैं, सच तो यह है कि उदयपुर में चार ही महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये। कविराजा श्यामलदास का 'वीर विनोद', कर्नल टॉड लिखित 'एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान', स्वामी दयानंद सरस्वती प्रणीत 'सत्यार्थ प्रकाश' और मेरा 'शंकराचार्य'।

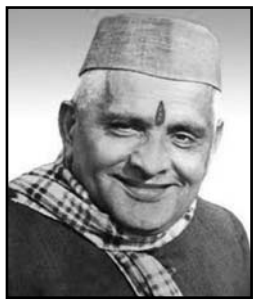

शंकराचार्य तो मुझसे लिखवाया गया। विश्व भारती से एक संन्यासी आये। तब मैं शंकराचार्य लिख रहा था। कहने लगे, शंकराचार्य लिखते रहना यह तुमसे लिखवाया जा रहा है। डॉ. दौलतसिंह कोठारी तो शंकराचार्य सुनने के लिए नियमित रूप से आते थे। जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जो बड़ी अलभ्य होती हैं। वे किसी से कही भी नहीं जाती और कहे बिना रहा भी नहीं जाता। कौन मानेगा इसे!

जीवन में जो संघर्ष है, उसकी चेतना मुझे चरम पर ले गई। वही चेतना तो शंकराचार्य में थी। संघर्ष आते हैं तो जीवन में जागृति दे जाते हैं। एक संवेदन होता है जो भीतर से जगाता है। जागरण का संवेग देता है। कहता है, उठो! जागो!! हम उद्वेलित होते हैं। आन्दोलित होते हैं और कुछ करने को मचल पड़ते हैं।

मैं प्रश्न करता हूं, विद्यापीठ में जब-जब भी आप कार्यकर्त्ताओं के बीच होते हैं, एक हूंकार भरी मुद्रा में जनतंत्रीय शिलान्यास की बात करते हैं। वे उतावले हो, बोल पड़ते हैं, सही है। जनतंत्र हमारे यहां सुरक्षित है। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से लेकर बड़े हाकमों तक जनतंत्र की एक ही वेग है पर इन दिनों उस जनतंत्र की अवमानना ही मैं देख रहा हूं। विश्वविद्यालय बनने के बाद सारा कार्य अनुदान आयोग के नियमों से बंध गया है। ऐसे में विद्यापीठ के कार्यकर्त्ता भी जनतंत्रीय शिलान्यास के अनुशासन से बंधना नहीं चाहते।

जन्नुभाई थोड़े मायुस होकर बोले, लगता है, हमारा तप अब क्षीण हो रहा है। विद्यापीठ ही कयों, सारी संस्थाओं की यही स्थिति हो रहा है। यदि मैं गांधी होता तो संस्थाओं को बंद कर देता। अब वैसे भी सार्वजनिक संस्थाओं की आवश्यकता नहीं है। सन् 1937 से हम प्रौढ़शिक्षा की लालटेन लिये हजारों गांवों तक पहुंचे हैं पर देश काल और परिस्थिति बदल चुकी है।

सरकार अरबों रूपया खर्च कर रही है। तब हमारा काम बगावत का काम समझा जाता था। इसके लिए हमारे पर दमन भी कम नहीं हुआ है। सत्ताधीशों से निपटने के लिए, विद्यापीठ को बचाने के लिए मुझे राजनीति में जाना पड़ा बाकी मैं राजनीति का व्यक्ति नहीं हूं। तब यदि राजनीति नहीं करता तो विद्यापीठ बचता ही नहीं। ये लोग तोड़ डालते।

मैंने सवाल दागा, पर जन्नुभाई मुझे तो सदैव लगता रहा कि आपकी प्रकृति में ही उबाल, जोश और एक विशेष प्रकार की ऊर्जा है जिसे आप चाहो तो भी कम या ठण्डी नहीं कर सकते। जन्नुभाई तनिक मुस्कान लाकर बोलते हैं, तुमने ठीक पकड़ा भानावत। सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए शंकर में भी तो एक ऊर्जा थी। मंडन मिश्र और शंकर के विवाद और शास्त्रार्थ में क्या संघर्ष की आग और चिंगारी नहीं थी? यों मेरे संस्कारों में मेरी मां विजया मां का अश्क है। हमने स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। केवल जेल नहीं गये सो स्वतंत्रता सेनानी नहीं हो सके।

और सुनो, मैं जब पढ़ता था तब नाटक करता था। उन दिनों डॉ. मोहनसिंह मेहता, देवीलाल सामर और मैं तीनों रंगमंच को लेकर चले। महाराणा कॉलेज में भी मैंने अनेक नाटक किये। उन दिनों नाटक पसंद किया जाता था।

एक किस्सा है, हमारे मित्र थे डॉ. उदयसिंह भटनागर। वे हमारे साथ थे। उन्हें नाटक में एक महिला की भूमिका दी गई। वे जब मंच पर आये तो दर्शकों में बैठे उनके पिता को इतना गुस्सा चढ़ा कि वे मंच पर आ लपके और उदयसिंह के दो तमाचे जड़ दिये। नाटक मेरे लिए तो एक हॉबी थी पर सामरजी और डॉ. मेहता तो एक मिशन की तरह लगे रहे।

- शेष पृष्ठ सात पर

# उच्चादर्शी समाज विज्ञानी प्रो. ब्रजराज चौहान

**प्रो. चौहान किसी कमरे में बंद घंटी-शिक्षा की बजाय उन्मुक्त प्रकृतिजन्य सहज संस्कारी शिक्षा के सूक्ष्मद्रष्टा समाजदर्शी थे। मौताणा सिविल रूप में समस्या है, क्राईम नहीं। समझौता है। किसी गलती की क्षतिपूर्ति संभव हो उस समाज को पिछड़ा कैसे कहेंगे? वह तो अधिक विकसित समाज है। जो आज भी सामूहिकता में जी रहे हैं, उन्हें सिखाने की बजाय हम उनसे सीख भी सकते हैं। सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिये। स्वयं प्रयोगशाला बनने की बजाय विशेषज्ञों, विशेषज्ञ संस्थाओं पर छोड़ दें। सबकुछ होने पर भी समस्या रहेगी तो उसके लिए झगड़ना पड़ेगा।**

एक समय था जब शिक्षा संस्थानों की पहचान वहां अध्यापनरत गुरुओं के कारण होती। इसी कारण छात्र दूर-दूर से अध्ययन करने आते। उदयपुर का महाराणा भूपाल कॉलेज तब राजपूताना-मेवाड़ में ही नहीं, सुदूर इलाकों तक में अपनी अनूठी ओळखाण लिये था।

प्रख्यात समाज विज्ञानी ब्रजराज चौहान की याद अब भी उस काल के अनेक छात्रों में बसी हुई है जिन्होंने उनके मार्गदर्शन में अपना शानदार केरियर बनाकर ख्याति अर्जित की। गुरु-शिष्य के सम्बन्ध प्राचीनकाल के ऋषि-आश्रम में दीक्षित छात्रों की तरह थे। सभी तरह से पक -पचकर ही छात्र गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता था।

ब्रजराज चौहान भी ऐसे ही गुरु थे जो अपने छात्रों को हर दृष्टि से शिक्षित कर उचित मार्गदर्शन देते और उनकी योग्यता के अनुसार उनका पथ प्रशस्त करते। उनसे शिक्षित शान्तिलाल भण्डारी ने 30 जनवरी 2020 को प्रो. चौहान की स्मृति को ताजा करते बताया कि वे किसी कमरे में बंद घंटी-शिक्षा की बजाय उन्मुक्त प्रकृतिजन्य सहज संस्कारी शिक्षा के सूक्ष्मद्रष्टा समाजदर्शी थे।

प्रो. चौहान के प्रयास से ही राज्य सरकार ने उदयपुर में ट्राइबल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (टीआरआई) की स्थापना की और उन्हें प्रथम डायरेक्टर बनाया। भट्टजी की बाड़ी में एक छोटे से मकान में इसका कार्य प्रारम्भ किया। आदिम जातियों के कुछ वस्त्र, आभूषण आदि एकत्र कर एक छोटे से म्युजियम की स्थापना की और ट्राईब नामक पत्रिका प्रारम्भ की। यहीं तब शान्तिलाल भण्डारी ने भी काम किया किन्तु सरकार द्वारा वांछित सहयोग नहीं मिलने के कारण चौहान साहब नौकरी छोड़ गये।

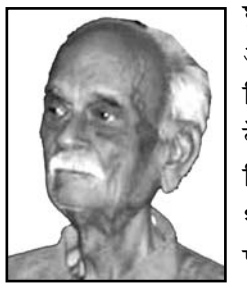

प्रो. चौहान ने अपने शिष्यों को अध्ययन कराने के साथ-साथ उनकी प्रतिभा विकसित करने और भावी जीवन को प्रशस्त बनाने में भी योग दिया। डॉ. योगेश अटल, डॉ. नरेन्द्र व्यास, प्रो. हरीश दोषी को याद करते भण्डारी बताते हैं कि हरीश दोषी सूरत विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुए। योगेश अटल को तो अपनी ओर से टिकिट खरीद उन्हें जबलपुर पढ़ाने भेजा। वहां तब अध्यापन करा रहे प्रो. दुबे को चिट्ठी भी लिख दी और वर्ष भर की छुट्टी लेकर वहां चौहान साहब पढ़ाने भी गये। ये ही योगेश अटल आगे जाकर विश्वस्तरीय समाज विज्ञानी के रूप में चर्चित होकर ख्यातिलब्ध बने।

ऐसे ही डॉ. नरेन्द्र व्यास को केरियर बनाने के लिए उन्हें मूर्धन्य समाजशास्त्री प्रो. घुरिये के पास एम. ए. के एक और प्रयास हेतु बम्बई विश्वविद्यालय भेजा। डॉ. व्यास के लिए चौहान साहब कहा करते कि वे असाधारण गुणों के मिश्रण थे। उनमें गुण तो असाधारण थे पर फल साधारण था। वे परीक्षा के दौरान पांच प्रश्नों में से तीन को ही हल कर पाते। प्रत्येक में प्रथम श्रेणी के अंक लाते पर उनका योग तो साधारण परीक्षा फल ही देता सो वे लौटे तो कॉलेज में ही उन्हें प्रवक्ता बना दिया और बाद में जब उन्होंने टीआरआई छोड़ा तो अपने पद पर उन्हें डायरेक्टर बनाया जहां वे सेवानिवृत्ति तक काम करते रहे।

स्वयं भण्डारी भी प्रो. चौहान के पट्ट शिष्यों में रहे। उन्होंने भी राजकीय महाविद्यालयों में अपनी सेवाएं दीं किन्तु वहां से मुक्त हो अपनी स्वयं की निजी संस्था सजीव सेवा समिति नाम से प्रारम्भ की।

प्रो. भण्डारी ने उन्हीं दिनों कॉलेज में अध्ययनरत एम. एल. मेहता का जिक्र करते बताया कि मेहता साहब पढ़ने में कुशाग्र थे। उनका विषय समाजशास्त्र नहीं था। वे बी. एस. सी. में प्रथम श्रेणी में पास हुए तो चौहान साहब ने उन्हें बुलाकर पूछा कि आगे क्या करने की सोची है। मेहता पास के भदेसर गांव के थे। बोले, नौकरी करना चाहूंगा। चौहान साहब ने उन्हें सलाह दी कि नौकरी का मोह छोड़ो और जयपुर जाकर फिजिक्स में एम.एस.सी. करो। उनकी सलाह ले वे जयपुर गये और अजमेर में व्याख्याता बन चौहान साहब से मिलने आये तब उन्हें राय दी गई कि अध्यापन के साथ-साथ साइड बाई साइड आर.ए.एस. की तैयारी करो। वे ही मेहता साहब आगे जाकर चीफ सेक्रेटरी बने और अपने कामकाज से बड़ी ख्याति प्राप्त की। बड़ा पद पाकर भी मेहता साहब अपने ग्रामीण परिवेशी परिजन की तरह सबके लिए सहज साधारण ही बने रहे और बनती कोशिश सभी का सहयोग करने में उद्यत रहे।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 मार्च 2020

## सम्पादकीय

# वह समय और मनुष्य

समय की व्याख्या पंडितों, विद्वानों और बड़ेरों ने अलग-अलग ढंग से की है। जब घड़ी नहीं थी तब घरों में रेत घड़ी थी और सूरज चांद प्रकृति के अन्य उपादानों से उसकी पहचान होती थी। प्रकाश और छाया से अन्दाज लगाया जाता था। काल को समझने नापने के अलग-अलग अन्दाज थे।

लेकिन सब धीरे-धीरे होता था। बदलाव भी और विकास भी धीरे-धीरे होता रहा पर आज का समय जिस तेजी से बल्कि तूफानी गति से बदल रहा है, ऐसी कल्पना भी नहीं रही। जो कुछ चलता आ रहा था उसे फटाफट बदलता मनुष्य स्वयं भी चकित हो रहा है।

अब कोई चीज स्थायीत्व लिए नहीं रही। ऋतुएं, ग्रह, नक्षत्र सब बदल रहे हैं। जिन उपकरणों को जीवनभर काम में लेते, वे अब बेमानी लग रहे हैं। उन्हें कोई संभालना तक नहीं चाहता। वे सब मन से उतरने लग गये हैं। हर चीज नई, नये बदलाव के साथ बड़ी आकर्षण देती आ रही है सो उन्हें खरीदने और उपयोगी बनाने की जैसे होड़ चल रही है।

त्यौहार, उत्सवों, रीतिरिवाजों, ब्याह जैसे प्रसंग बड़े बदलाव में आ गये हैं। सब कार्य मौसमी और हर कार्य ठेकाजनित करने में हर कोई अपनी समझदारी समझ रहा है। अब हर काम में आने वाली चीजें लम्बी अवधि का जीवन लिए नहीं होतीं। समय विशेष तक ही उनकी उपयोगिता चमक देती है। बहुत सी चीजें तो यूज एण्ड थ्रो का सिद्धान्त लिए ही बनाई जाती हैं।

यह तो जीवनानुभव के घर-परिवार की बात हुई पर साहित्य जगत की बात करें तो वहां भी यही हवा मिलती है। बहुत सारी पत्रिकाएं जो दूर-दूर तक अपनी पहचान देती थीं वे बन्द हो गई। जो निकल रही हैं उनमें भी बहुतों की संख्या तो ऐसी है जिनमें कोई पठनीय या संग्रहणीय, उपयोगी सामग्री नजर नहीं आती। जो अच्छी निकल रही हैं उनके पाठक बहुत कम रह गये हैं। मीडिया की जबर्दस्त दखल रहने से छपित साहित्य का समापन ही देखा जा रहा है।

इलेक्ट्रोनिक उपकरणों ने तो सारी फिजां ही बदल दी है। जितना जो कुछ लेखन छप रहा है उसे देखने, पढ़ने की किसी को फुर्सत नहीं है। लिखित की बजाय मोबाईल और कम्प्यूटर पर पूरी दूनियां की जब जैसी जानकारी चाहिए प्राप्त की जा रही है। तब भी कुछ लोग हैं जो अपने हिसाब से साहित्य के मूल्यों की रक्षा करने की दृढ़-समझ लिये साधनामूलक संघर्ष करने के विश्वासी बने हुए हैं।

इस दृष्टि से उज्जैन से विगत बारह वर्षों से प्रकाशित मासिक पत्रिका समावर्तन के मार्च के ताजे अंक के अभिमुख में लिखे अभिमत को यहां उद्घृत किया जा रहा है जो साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के वर्तमान हालात पर सबका ध्यान आकृष्ट किये है। रमेश दवे लिखते हैं-

'पत्रिका अब ऐसे समय में जी रही है जब मीडिया का आक्रमण है। पाठक रूचि का लगभग विसर्जन है और पश्चिम के विचारक साहित्य, पुस्तक और तरह-तरह के अंतों की वैचारिक घोषणा कर रहे हैं। इलेक्टिोनिक उपकरणों ने मनुष्य का मन ही बदल दिया है। हम आत्म-बल के बजाय आत्म-छल के शिकार हैं। जितना लिखा जा रहा है, उतना पढ़ा नहीं जा रहा। जीवन अब साहित्य-राग से न जुड़कर भौतिकताओं के परिवर्तनशील आकर्षण से ग्रस्त है। छात्रों, प्राध्यापकों, अध्यापकों, पत्रकारों आदि सबकी रूचियों पर मीडिया का इतना प्रभाव है कि अब हम अपने सोचने, सृजन करने, श्रेष्ठ साहित्य पढ़ने और जीवन को कलाओं से समृद्ध करने की प्रवृत्ति ही गंवा बैठे हैं। ऐसे विपरीत समय में भी साहित्य-साधना का संघर्ष करने रहना कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।'

पाठक स्वयं सोचें और विचार करें कि उन्हें इस स्थिति में अपनी परिस्थिति के पायदान की पहचान कैसे, किस रूप में कायम रखनी है।

# 'मेगा सेफ्टी कैंपेन' का शुभारंभ

**उदयपुर।** टाटा मोटर्स ने 'मेगा सेफ्टी कैंपेन' को शुरु करने की घोषणा की। इस अभियान के तहत देश भर में 650 से ज्यादा वर्कशॉप्स पर निशुल्क सुरक्षा चेक-अप कैंप लगाए जाएंगे। 15 से 31 मार्च तक आयोजित हो रहा यह अभियान नेशनल सेफ्टी मंथ (राष्ट्रीय सुरक्षा माह) के दौरान टाटा मोटर्स की समग्र पहुंच का हिस्सा है और यह कंपनी के उपभोक्ताओं को वाहनों का एक्सक्लूसिव सेफ्टी चेक-अप कराने की सुविधा प्रदान करने का प्रयास करेगा। टाटा मोटर्स में सीनियर जनरल मैनेजर और हेड - कस्टमर केयर (डोमेस्टिक और इंटरनेशनल बिजनेस) शुभाजीत रॉय ने कहा कि कार के पूरे सेफ्टी चेकअप के अलावा कंपनी निशुल्क टॉप वॉश और फोम वॉश भी ऑफर करेगी। कार की सर्विसिंग पर आकर्षक छूट दी जाएगी। लुब्रिकेंट्स और कार की एक्सेसरीज के अलावा कई अन्य मूल्यवर्धित सेवायें भी देशभर में जगह-जगह खोली गई वर्कशॉप में मिलेंगी।

# भारत में नृसिंह मन्दिरों की परम्परा

**-अश्विनी कुमार आलोक**

बिहार अवस्थित चमरहरा गांव के राजपूत नृसिंह को कुल देवता तथा ग्राम देवता के रूप में पूजते हैं। गांव के बीचोंबीच एक बड़े से परिसर में नृसिंह देव का मंदिर है। स्थानीय लोग नृसिंह को नरसिंहनाथ कहते हैं। मंदिर में पिंडी बनी हुई है। घरों में भी कुलदेवी बन्नी की पिंडियां हैं। मंदिर में प्रतिवर्ष चैत माह की चतुर्थी को सामूहिक स्तर पर पूजा होती है। गेहूं के मोटे आटे से बना रोट एवं दूध तथा भांग मिले शरबत का भोग लगाया जाता है। पूजा की सामग्री नरसिंहनाथ को अर्पित करने वाले भक्त को दिनभर उपवास रखना पड़ता है। पूजा के बाद सभी जाति के लोग प्रसाद ग्रहण करते हैं।

राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक शहर के रूप में विकसित हिंडौन जयपुर से 156 किलोमीटर पूर्व दिशा में अवस्थित है। यह धौलपुर लोकसभा क्षेत्र में अरावली पर्वत श्रृंखला के बीच बसा हुआ है। होली से जुड़ी हुईं लोकमान्यताएं यहां आज भी होली को भक्त प्रहलाद से जोड़ती हैं। यहां लाल पत्थरों के कई मंदिरों में भगवान नृसिंह की पूजा होती है। भागवत पुराण में भी हिंडौन को भक्त प्रहलाद एवं उसके पिता हिरण्यकश्यप की भूमि बताया गया है। मान्यता है कि महाभारत में वर्णित भीम की पत्नी हिडिम्बा भी यहीं रहती थी।

राजस्थान के करौली जिले को भी धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से प्रचुर मान्यता मिली हुई है। यह क्षेत्र 955 ई. पूर्व के आसपास राजा विजयपाल के द्वारा स्थापित हुआ था। कहा जाता है कि विजय पाल भगवान श्रीकृष्ण की वंश परंपरा में थे। 1818 में करौली राजपूताना एजेन्सी में सम्मिलित किया गया था। भारत की आजादी के बाद तत्कालीन राजा गणेशपाल देव ने इसे भारत का हिस्सा बनाना तय किया और सात अप्रैल 1949 को यह राजस्थान राज्य के भाग के रूप में स्वीकारा गया। करौली में ऐतिहासिक किले एवं मंदिर हैं। मदिरों में भगवान मदनमोहन एवं नृसिंह विराजमान हैं।

आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम् में सिंहाचलम नरसिंह मंदिर है। यह भगवान विष्णु के वाराह नरसिंह रूप की पूजा का प्रमुख क्षेत्र है। अक्षय तृतीया को सिंहाचलम में नरसिंह की पूजा होती है.

कर्नाटक के भद्रावती में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित तेरहवीं शताब्दी का एक नरसिंह मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण होयेसल राजवंश के तत्कालीन राजा ने कराया था। इसमें सोप पत्थर का उपयोग हुआ है। इतिहासकार एडम हार्डि ने इसे वास्तुकला की ट्रिपल श्राइन शैली माना। यहां भगवान नरसिंह की पूजा होती है। इसे लक्ष्मी नरसिंह मंदिर के रूप में जाना जाता है।

मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर में छह सौ साल पुराना मंदिर है। लाखनसिंह नाम के उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर से आये हुए जाट राजा ने इसका निर्माण कराया था। तब मानिकपुर से लेकर नागपुर तक पिंडारियों का आतंक था। नागपुर के राजा ने पिंडारियों के सरकार को पकड़ने की हिम्मत करने वाले को यह क्षेत्र दान करने की घोषणा की थी। लाखनसिंह ने यह हिम्मत की और पुरस्कार में मिले अस्सी गांवों में राज किया था। उसने नरसिंह देव का मंदिर बनवाया था।

मध्यप्रदेश के जबेरा गांव में नृसिंह का अति प्राचीन मंदिर है। मंदिर में चौकठ की पूजा की जाती है। मान्यता है कि हिरण्यकश्यप् का वध करने वाले भगवान नरसिंह ने यहां दर्शन दिये थे। जबेरा के लोग नरसिंह के प्रति श्रद्धा रखते हैं.

जोशी मठ को लेकर कई प्रकार की कथाएं हैं। इस मठ को स्कंद पुराण के केदार खंड में वर्णित प्रसंग से जोड़ा जाता है। कथा है कि भगवान शालीग्राम के हाथ निरंतर दुर्बल होते जा रहे थे। आशंका थी कि यदि यह शालीग्राम से अलग हुआ तो नर एवं नारायण पर्वत आपस में टकरायेंगे और बद्रीनाथ का रास्ता बंद हो जायेगा। तभी राजा वासुदेव शिकार के लिए निकले एवं भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप में आकर रानी से भोजन मांगा। नरिसंह रूप धारी विष्णु भोजन करने के बाद राजा के बिछावन पर सो गये एवं राजा ने आशंका में आकर उनके हाथों पर तलवार चला दी। कटे हुए हाथ से दूध बहने लगा और भगवान के आदेश पर राजा ने जोशी मठ छोड़ दिया तथा कत्यूर में निवास करने लगा। जोशी मठ में नृसिंह की मूर्ति है। यह नंद एवं मौर्य राजवंश का भी क्षेत्र रहा है। जोशी मठ में शंकराचार्य ने शहतूत के पेड़ के नीचे तप किया था।

बिहार के पूर्णिया जिला अवस्थित बनमनखी में नरसिंहावतार हुआ। नरसिंह रूप भगवान विष्णु ने जब हिरण्यकश्यप का वध किया था एवं होलिका दहन हुआ था, तब से स्थानीय लोगों ने बनमनखी के इस क्षेत्र में न तो होलिका दहन किया न ही उल्लासपूर्वक होली का पर्व मनाया।

हजारों सालों के बाद वर्ष 2019 में पहली बार यहां होली का पर्व मनाया गया। मान्यता है कि किसी कुम्हार ने बर्तन पकाने के लिए आवा लगाया था। किसी बर्तन में भूलवश रह गये बिल्ली के बच्चे को बचाने के लिए कुम्हार ने हरि नाम का स्मरण किया। यह घटना दानवराज हिरण्यकश्यप के बेटे प्रहलाद के सामने घटित हो रही थी। हिरण्यकश्यप एवं हिरणाक्ष नामक दो दानव भाइयों की एक बहन होलिका थी। हिरण्यकश्यप ने देवी वरदान का दुरूपयोग करते प्रजा पर दबाब डाला।

प्रहलाद ने हरि नाम स्मरण के कारण पके हुए बर्तन के बीच से सुरक्षित निकले बिल्ली के बच्चे को देखा तो उसके मन में पिता से वितृष्णा एवं हरि नाम के प्रति आस्था जगी। होलिका को वरदान स्वरूप एक चादर मिली हुई थी, जिससे ढक जाने के बाद उसके शरीर पर अग्नि का प्रभाव नहीं पड़ता। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को जलाकर मारने का दायित्व होलिका को दिया। देव योग से प्रहलाद बच गया एवं होलिका का दहन हो गया। सिकलीगढ़ धरहरा के लोग होलिका को अपनी बेटी मान हजारों वर्षों तक होलिका दहन से दूर रहे।

होलिका के मारे जाने के बाद हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद के वध का प्रयास किया। उसने प्रहलाद से पूछा- बताओ, कहां हैं भगवान? प्रहलाद ने उत्तर दिया- हममें, तुममें, खड्ग, खम्भ में। सब में नारायण हैं। तभी नारायण ने खंभ में से नरसिंह रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यपक का वध किया। सिकलीगढ़ धरहरा में करीब दस फीट ऊंचा एवं दस फीट बेलनाकार खंभा आज भी है। कहा जाता है कि इसी स्तंभ से विष्णु का नरसिंहावतार प्रकट हुआ था। खम्भे के शीर्ष भाग में एक छिद्र भी था जहां से यदि पत्थर का टुकड़ा डाला जाता तो पत्थर के पानी में गिरने जैसी आवाज सुनाई देती थी। बाद में वही पत्थर पास बहने वाली हिरण्य नदी में तैरता दिखाई पड़ता। हिरण्य नदी विलुप्त हो चुकी लेकिन वह स्तंम्भ आज भी है। ब्रिटिश हुकूमत ने इस स्तंभ को हाथियों के सहयोग से उखाड़ने का प्रयास किया लेकिन वह झुककर रह गया।

# रंग समय के चंग

**प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत :**
होली का शुभराज है, रंग सारंगदेवोत।
विद्यापीठ मशाल की, खूब जगाई जोत।।
खूब जगाई जोत, कलश कंगूरे चांगे।
नागर की गागर को, करदी सागर लांगे।।
खुले विषय वैविध्य, शोध के मिटे सभी अवरोध।
पुरातत्व साहित्य संस्कृति, ज्योतिष के युगबोध।।
उठापटक होती रही, कुर्सी की घमसान।
बाजीमारी चमक दी, तमने राखी शान।।

**बसंत निरगुणे :**
संत निरगुणे ताल देरहे, बैठ पाल भोपाल।
हम ऋतुराज बसंत हैं, फूलें डाल रसाल।।
वनवासी भस्मी रमें, रमते रामप्रसाद।
कलालोक में चख रहे, लोककला के स्वाद।।
बीत रहा स्वर्णिम समय, निरख सखों के संग।
भ्रमणशील रहते सदा, यही ढंग बेढंग।।

**प्रो. देवकर्ण सिंह :**
अलख पिछाणी उदिये, हवा मंगरी माय।
संत चतरसिंह बावजी, ने साधी निज काय।।
ऐसे ही राठौड़ हैं, हिरणमगरी ठौड़।
दोहों के सरताज हैं, जिनकी कोई न जोड़।।
लेखन में देखन लगे, रूपाहेली लार।
परम सादगी का चरम, ही जीवन का सार।।
सोने के सिक्कों से, दोहे टकसाली हैं।
डिंगलमय हिंदीमय डिंगल की प्याली हैं।।

**डॉ. विद्याविंदुसिंह :**
शहर नवाबी में हिंदी का, थड़ा रोपकर
कई रत्न मणि महकाये, साहित्य कुंभ में
हिंदी का संस्थान बन गई।
सभी विधाओं में विद्या की चंटी बाजे
अवधी लोक की शान
सृजन विभूति बिंदु सिंह-सी
जान और पहचान बन गई।।
उड़न खटोली-सी उड़ती भागमभागी में
जगह-जगह की सभा गोष्ठियां
मुलकाती हैं।
बड़े-बड़े विद्वानों की संगत पंगत में
हंसवाहिनी हंसा
हर-हर पुलकाती हैं।।
सरल चित्त की सौम्य स्वभावी
ऐसी बहना।
विमल विल्लरी मिले दूसरी
और कहीं तो मुझसे कहना।।

**माधव नागदा :**
लाल मादड़ी के ठाकुर हैं, माधवजी महाराज।
मारदड़ी का खेल खेलते, लघुकथा के काज।।
संबोधन के घाट नहाते, अभिनव करते सेवा।
पंड्याजी के चने चाबते, मूंगफलियों के मेवा।।
छोटो सो बलमो, एकलो गुल्ली खेले।
संतों की धूणी पर, भस्मी में दंड पेले।।

**डॉ. पूरन सहगल :**
सदा बहारें ही रहती थी,
देखा नहीं हताशा।
अब सब ही रह गया अलूणा,
सूना पड़ा मनासा।।
बालकवि बिन बेगाना हूं,
घरवाली प्याली खाली।
टूट गई छतरी की तणियां,
सुबक रही अंखियां आली।।
करम गति का रहा परोसा,
देख रहा दुनिया सारी।
जग जीवन और राम भरोसे,
महक रही फुलवारी।।

**प्रो. जगमलसिंह :**
पांच दशक के बाद, मैत्री का साथ जगा है।
जैसे गड़ा हुआ धन, कोई हाथ लगा है।।
संबंधों के पार बहुत, कुछ अनजाना है।
दीवानी मीरां ने जाना, दीवाना है।।
श्रवण नहीं पर श्रवणपूत, अब भी पलते हैं।
बिना तैल बाती की ज्योति, जोत जलते हैं।।
किससे करें बात दिल की, आत्मा बलती है।
दिलवालों की मत पूछो, होली जलती है।।

**श्रीकृष्ण शर्मा :**
दशक पांचवां-छठा था,
जब उदियापुर साहित्य श्रीवर।
समारोह शोभित करते थे,
देवराज सामर नागर।।
वीरचंद श्रीकृष्ण विजय,
चंदन जैसे थे महाबली।
जगह-जगह जाजम ढलती थी,
कलालोक की कमल कली।।
तीन तमंचे अब भी हैं,
तीये-छक्के से इधर-उधर।
राम और गोपाल खड़े,
आशीष लिये ढूंढें दर-दर।।

**डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश' :**
अब वे रंग नहीं रहे, सब ही हैं बदरंग।
कार्ड लिफाफे जैसे होते, रहे कभी बैरंग।।
वे नभ, वे बादल नहीं, वह पानी मुल्तान।
बिज्जु रानी, अन्दर राजा, धनख न देता तान।।
कौन सुने, किससे कहें, बेलन भई पिचकारी।
राधा रफ्फू हो गई, भटकन लगे मुरारी।।

**कला समय उर्फ भंवरलाल श्रीवास :**
उठापटक साहित्य में, समय बेतुका जान।
खस्ताहाल संस्कृति कला, रक्षा की धीमान।।
भंवर जाल से खींचकर, कला समय के संग।
द्वैमासिक भोपाल से, प्रगट भई चतुरंग।।
होली पर स्वीकार करें, शुभमंगल आशा।
सत्साहित की समझ में, कला समय हो खासा।

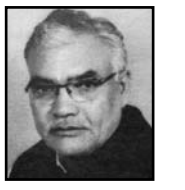

**अनिल भानावत 'स्वामीजी' :**
नँह पंडा, पंडित, गुरु, आर्य, पुजारी, संत।
ऋषि, मुनि नँह दाढ़ी जटा, साधु और महंत।।
महाराज स्वामी नहीं, गृहस्वामी चित चोर।
ज्योतिष में अव्वल धवल, दखल देत पुरजोर।।
भानावत परिवार में, यह अद्‌भुत संयोग।
बड़े भाग से मिलते ऐसे, ग्रह नक्षत्र संजोग।।

**चरत-भरत :**
हर मन के मन हर हुए, गया जमाना बीत।
वेद बंद बस्ते भये, व्यास बसंती पीत।।
देख लिया सब जगत को, बिन हत्थे का ठेला।
धक्कामुक्की हो रही, चलाचली का खेला।।
वंदन प्रताप को टिकटों से, करना पड़ता है लाचारी।
खरपत के खेतों में गुलाब की, महक रही क्यारी-क्यारी।।
दिन फिरते देर नहीं लगती, यश कीर्ति किरण पर किसका हक।
मीरां निर्वासित बनी यहां, पूरी दुनियां है नत मस्तक।।
सामर, श्याम परमार और जगदीशचंद्र माथुर।
बालकवि, माचवे, सिंघवी, नंद, पूनम, प्रकाश आतुर।।
शांता त्रिवेदी, शलभ, नेम, चन्द्रेश व्यास, जय विश्वंभर।
भाई भौजाई मात पूत पत्नी सब ही हैं मेरे वर।।
राजनीति ठहरे पानी सी, निथर-निथर रंग देती है।
बहती धारा ही शाश्वत बन, युगयुगीन सुध लेती है।।
शिक्षा संस्कारों से ही अब, पहचाने जाते शूरवीर।
तलवारों का युग बीत गया, द्रोपदी कहां अब कहां चीर।।
होली पर ज्ञात-अज्ञात कई, भूले चूके सब क्षमा करें।
हे पार्श्व कल्ला वंदन मेरा, तन में हम सबके रमा करें।।

**-संप्रति के सौजन्य से**
डॉ. तुक्तक भानावत, महासचिव, संप्रति संस्थान

# उत्कृष्ट कार्यों के लिए 28 महिलाएं सम्मानित

**उदयपुर।** अरावली फाउंडेशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर होटल रेडिसन में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 28 महिलाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सहप्रायोजक आर.के. आई.वी.एफ एवं बी.एन.आई उदयपुर थे। कार्यक्रम में वन टू ऑल एवं पार्श्वकल्ला का भी सहयोग रहा। संचालन श्रीमती शकुंतला सरूप्रिया ने किया। मुख्य अतिथि डॉ. आनंद गुप्ता, डॉ. तरूण अग्रवाल एवं अनिल छाजेड़ ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अल्पेश लोढ़ा ने सभी का गुलदस्ते एवं मोमेंटो से स्वागत किया।

डॉ. तरूण अग्रवाल ने अतिथियों एवं विजेताओं आभार प्रकट किया। डॉ. आनंद गुप्ता ने महिलाओं के योगदान की सराहना की तथा वर्तमान समय में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में उनके योगदान की महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मानित होने वाली महिलाओं के विशिष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला तथा इस तरह के कार्यक्रमों की जरूरतों पर बल दिया।

कार्यक्रम में विनिता बोहरा (आई.ए.एस), शाकुंतलम की डॉ. शकुंतला पवांर, सी.पी.एस स्कूल की अलका शर्मा, महिला सृमद्धि बैंक की पुष्पा सिंह, एडवोकेट रागिनी शर्मा, विख्यात कवयित्री एवं साहित्यकार विमला भण्डारी, डॉ. कहानी भानावत, किरण खतरी, शिखा सक्सेना, लाड़कंवर लौहार, एनिमल एड की एरीका इब्राहिम, ब्रह्माकुमारी की रिटा बहिन, कत्थक आश्रम की चंद्रकला चौधरी, योगा क्षेत्र में शुभा सुराणा, दैनिक भास्कर की निवेदिता मनीष, घुमोसा की सुरभी जैन, रक्षा राकेश, बेडमिंटन खिलाड़ी माया चावत, जी.डी. गोयनका स्कूल की प्रियंका शर्मा, सरला मुंदड़ा, विजयलक्ष्मी गलुंडीया, प्यारी रावत, मनिषा भटनागर, सरिता सुनारिया, सुरभी धींग, आई.आई.एम उदयपुर की शानु लोढ़ा, कला आश्रम की सरोज शर्मा, शिखा पुरोहित, एवं डॉ. रीतू मेहता को सम्मानित किया गया।

# वंदना को 'आई एम शक्ति' पुरस्कार

**उदयपुर।** नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल को महिला सप्ताह- 2020, राज्य स्तरीय समारोह में 'आई एम शक्ति' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित समारोह में राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग एवं महिला एवं बाल विकास विभाग राज्यमंत्री श्रीमती ममता भूपेश बैरवा ने उन्हें यह पुरस्कार जयपुर के राज्य कृषि प्रबंध संस्थान ऑडोटोरियम में दिया। समारोह में वंदना सहित महिला एवं बाल कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रदेश की 17 महिलाओं को भी सम्मानित किया गया। वंदना अग्रवाल महिला सशक्तिकरण एवं गरीब, निर्धन एवं दिव्यांग बच्चियों को पढ़ाने और उन्हें स्वरोजगार प्रदान करने की दिशा में विगत 19 सालों से कार्य कर रही है। वंदना ने अपना सम्मान उदयपुर की हर बेटी, बहू और माँ को समर्पित किया है।

## गेलेक्सी एस20 प्लस और एस20 लॉन्च

**उदयपुर।** सैमसंग के लेटेस्ट फ्लैगशिप फोन गेलेक्सी एस20 प्लस और एस20 स्मार्टफोन को

उदयपुर में पैरागन मोबाइल शॉप पर कैक काटकर सैमसंग के एबीएम मनीष सनाढ्य, एएसएम जितेन्द्र साहू, जेडएसएम पुरनानशु बॉस, हिटलर शर्मा, पैरागन के प्रोपराइटर पुष्पेन्द्र जैन, सैमसंग मोबाईल के डिस्ट्रीब्यूटर भारत नागोरी ने लांच किया।

पैरागन के प्रोपराइटर पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि इन दोनों फोन की स्क्रीन क्रमश: 6.3 तथा 6.7 की है। इस फोन की खास बात यह है कि यह दुनिया का पहला ऐसा फोन है जिसमें 8के वीडियो रिकॉर्ड किये जा सकते हैं। लो लाइट कंडीशन में ब्राइट नाइट शॉट कैप्चर किये जा सकते हैं। यही नहीं इसमें स्पेस जूम भी दिया गया है। गेलेक्सी एस20 प्लस में 4500 एमएच की बेटरी और एस20 में 4000 एमएच की बैटरी है जो उपभोक्ताओं को पूरे दिन बात करने की आजादी देती है। इसमें 12+12+64 मेगापिक्सल का रियर कैमरा है जिसमें 10 एमपी के साथ ड्यूल मेगापिक्सल तथा 10 एमपी के साथ ड्यूल मेगापिक्सल का फ्रंट सेल्फी कैमरा है।

इसके सिंगल टेक फिचर से एक क्लिक में उपभोक्ता 10 फोटो एवं 4 वीडियो एक साथ अलग-अलग एंगल से बना सकते हैं। गेलेक्सी एस20 प्लस की कीमत 73,999 और एस20 की कीमत 66,999 रुपए है।

## जगुआर लैंड रोवर और टाटा पावर में भागीदारी

**उदयपुर।** जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने उसने संपूर्ण ईवी चार्जिंग

समाधानों की पेशकश के लिये टाटा पावर के साथ भागीदारी की है। टाटा पावर भारत के 24 शहरों में 27 आउटलेट्स के अपने रिटेल नेटवर्क और ग्राहक के आवास एवं/अथवा कार्यालय पर भी जगुआर लैंड रोवर के लिये चार्जिंग समाधान प्रदान करेगा। भारत की सबसे बड़ी एकीकृत विद्युत कंपनी टाटा पावर 7केडब्ल्यू से लेकर 50केडब्ल्यू क्षमता तक एसी और डीसी चार्जर्स की श्रृंखला प्रदान करने के लिये उत्तरदायी होगी। जगुआर लैंड रोवर इंडिया के प्रेसिडेन्ट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि टाटा पावर के साथ हमारी भागीदारी जगुआर लैंड रोवर के ग्राहकों के महत्व में भारी वृद्धि करेगी। यह गठबंधन हमारे पहले इलेक्ट्रिक वाहन जगुआर आई-पेस के मालिकों को आसान और बाधारहित चार्जिंग अनुभव देने वाले सही परिस्थितिक तंत्र के निर्माण की दिशा में एक कदम है। जगुआर आई-पेस का भारत में डेब्यू इसी वर्ष होगा। टाटा पावर कंपनी लि. में न्यू बिजनेस के सीएफओ एवं प्रेसिडेन्ट रमेश सुब्रमण्यम ने कहा कि टाटा पावर एक संपूर्ण ईवी चार्जिंग भागीदार के तौर पर जगुआर लैंड रोवर इंडिया के साथ काम करते हुए प्रसन्न है।

## सारथी आराम केंद्र का उद्घाटन

**उदयपुर।** टाटा मोटर्स ने पास्को मोटर्स के साथ साझेदारी में उदयपुर के मादड़ी में सारथी आराम केंद्र का

उद्घाटन किया। यह पिछले 10 महीनों में ट्रक ड्राइवरों के लिए टाटा मोटर्स की ओर से लॉन्च किया गया पांचवां सारथी आराम केंद्र है। इस अनोखी पहल का प्राथमिक उद्देश्य कॉमर्शियल वाहनों के ड्राइवरों के लिए कार्य करने के माहौल में सुधार लाना, रहन-सहन के बेहतर स्तर को प्राथमिकता देना और और उनकी शारीरिक और मानसिक सेहत को दुरुस्त करना भी है। सारथी आराम केंद्र का उद्घाटन उनके साथ टाटा मोटर्स और पॉस्को मोटर्स के सीनियर मैनेजर, फ्लीट ओनर्स, प्रमुख उपभोक्ता, सेल्स और सर्विस टीम के साथ 65 से ज्यादा सारथी शामिल थे। लॉन्चिंग के दौरान टाटा मोटर्स ने समर्थ हेल्थ चेकअप कैंप लगाया। इसके अलावा ट्रक ड्राइवरों के लिए अलग-अलग माहौल में स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने और सुरक्षित रहने का प्रशिक्षण दिया गया। टाटा मोटर्स में कॉमर्शियल व्हीकल बिजनेस यूनिट में सेल्स और मार्केटिंग विभाग के वाइस प्रेसिडेंट राजेश कौल ने कहा कि देशभर में खोले गए सारथी आराम केंद्र को ट्रक ड्राइवरों से मिले जबर्दस्त रेस्पांस के बाद हम इस तरह के और केंद्रों खोलने के लिए उत्साहित हैं।

## तितलियों का अद्भुत संसार

ऋतु अनुसार हमारे आस-पास कई पेड़ पौधों पर रंग-बिरंगे फूलों व कीटों का संसार दिखाई देता है। इन दिनों समूचे मेवाड़-वागड़ का पर्यावरण जगत सहजना, पलाश, शीशम, सेमल आदि फूलों से सुशोभित है। इन पर कई तरह के जीवों-पक्षियों के साथ-साथ तितलियों को मंडराते हुए देखा जा सकता है।

राजस्थान की तितलियों पर शोध कर रहे डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा निवासी मुकेश पंवार बताते है कि 14 मार्च का दिन समूचे विश्व में 'बटरफ्लाई डे' के रूप में मनाया जाता है। बटरफ्लाइज अर्थात् तितलियां शीत रक्त प्राणी होने से ग्रीष्म ऋतु में बाहर आकर सक्रिय होने लगती हैं।

इनका जीवनचक्र 4 अवस्थाओं का होता है- (1) अण्डा (2) लार्वा (ईल्ली), (3) प्यूपा (4) वयस्क तितली। सभी तितलियों के लार्वा के भोज्य पौधे तथा वयस्क तितलियों के रस पीने के पौधे उनकी प्रजाति के अनुसार भिन्न-भिन्न हैं। इन दिनों शीशम के फूलों पर जेब्रा ब्लू, कॉमन जे, टेल्ड जे, कॉमन रोज आदि तितलियों को रस पीते देखा जा सकता है।

**मेवाड़-वागड़ में 105 से अधिक प्रजातियां**

राजस्थान में अनुमानित 150 के लगभग तितलियों की प्रजातियां पाई जाती हैं उसमें से 105 प्रजातियों की तितलियां तो मेवाड़-वागड़ में ही हैं। कॉमन रोज, कॉमन जय, टेल्ड जय, लाईम, प्लेन टाईगर, ब्लू टाईगर, कॉमन टाईगर, ब्लू पेंसी, लेमन पेन्सी, यलो पेन्सी, टाउनी कॉस्टर, मोटल्ड एमीग्रांट, कॉमन एमीग्रांट, स्माल ओरेंज टीप, व्हाईट ओरेंज टीप, यलो ओरेंज टीप, स्माल ग्रास यलो, कॉमन ग्रास यलो, बरोनेट, इंडियन स्कीपर, इंडियन पाम बोब, फोरगेट मी नोट, ग्राम ब्लू, अफ्रीकन बबूल ब्लू, स्मोटेड स्माल फ्लेट, वेस्टर्न स्ट्रीप्ड अल्बाट्रोस, स्माल कुपीड, डार्क ग्रास ब्लू, टीनी ग्रास ब्लू, इंडियन रेड फ्लेश, राउडेड पीएरोट, कॉमन गल, पीओनिर, ग्रेट एग फ्लाई तथा डनाईड एग फ्लाई आदि प्रजातियों की तितलियों को यहां आसानी से देखा जा सकता है।

तितलियों का मानव जीवन में बड़ा महत्व है। तितलियां प्राकृतिक पर्यावरण के उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक है। ये परागण करती हैं जिससे पौधों को फूल से बीज बनाकर वंशवृद्धि में सहयोग मिलता है।

तितलियां एवं शलभ स्थानीय खाद्य श्रृंखला की अहम कड़ी हैं। इनका भक्षण करके कई तरह के पक्षी, मेंटिस, छिपकलियां, मकडियां, वास्प, ड्रेगनफ्लाई आदि अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

## बच्चों, वृद्धों, गर्भवती महिलाओं और मांसाहारियों को है कोरोनो वायरस से ज्यादा खतरा : डॉ. भटनागर

**उदयपुर।** कोरोनो वायरस एक प्रकार का सर्दी जुखाम से संबंधित व्यापक वायरस है जो जानवरों व इंसानों दोनों में पाया जाता है। इसमें सर्दी जुकाम से लेकर गंभीर फेफड़ा रोग भी हो सकता है। इस वायरस में 8 से 10 प्रतिशत मामालों में फेफड़ों व श्वांस के गंभीर रोगों के साथ निमोनिया में परिवर्तित होकर जान भी ले सकता है। यह जानकारी पारस जे. के. हॉस्पिटल में सीनियर कंसलटेंट इन्टरनल मेडिसिन डॉ. संदीप भटनागर ने कोरोना वायरस पर अवेयरनेस कार्यक्रम में दी।

डॉ. भटनागर ने बताया कि इस बीमारी के शुरुआती दौर में सामान्य सर्दी खांसी जुखाम जैसे ही लक्षण दिखाई पड़ते हैं जिस कारण इसको शुरुआत में पहचानना मुश्किल हो जाता है। लंबे समय तक सर्दी, खांसी जुखाम, बुखार व अन्य बीमारियां होने पर तुरंत नजदीकी चिकित्सक से संपर्क करना चाहिये जिससे बीमारी को बढ़ने से रोका जा सकता है। डॉ. भटनागर ने बताया कि यह एक संक्रमण जनित रोग है और यह हवा द्वारा, छूने, एक दूसरे के कपड़े व अन्य सामान प्रयोग करने से एक से दूसरे में फैलता है। पालतु जानवरों बिल्ली, कुत्ता आदि से भी फैलता है। इससे बचने के लिए एन्टिऑक्सिडेन्ट से युक्त आहार लेना चाहिये। इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी। भीड़भाड़ वाले इलाकों से दूर रहना, बार-बार हाथ धोना, टीश्यू पेपर, रुमाल को सही से प्रयोग लेना, खूब पानी पिना, पर्याप्त नींद तथा शाकाहारी जीवनशैली अपनाकर कोरोनो वायरस से बचा जा सकता है। डॉ. भटनागर ने बताया कि छोटे बच्चों, वृद्धों, डायबिटीज, हार्ट व फेफड़ों की बीमारी के साथ इम्यून डिजीज, एचआईवी, कैंसर, गर्भवती महिलाओं तथा मांसाहारी को इस वायरस से ज्यादा खतरा है।

## प्रदेश में सरसों उत्पादन में वृद्धि के लिए 100 मॉडल फॉर्म्स शुरू

**उदयपुर।** खाद्य तेल निर्माताओं के शीर्ष संगठन सोलेवेंट एक्सट्रैक्शन एसोसिएशन ऑफ इण्डिया एवं सॉलिडरीडाड संस्था की ओर से बताया गया कि राजस्थान में इस बार सरसों की उपज में वृद्धि दर्ज करते हुए 32.50 लाख टन होने की संभावना है। गत वर्ष फसल यह 32.00 लाख टन ही थी।

एसईए रेपसीड मस्टर्ड प्रमोशन काउन्सिल के चेयमैन विजय डाटा ने बताया कि देश में खाद्य तेलों की बढ़ती मांग की वजह से देश में तिलहन उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता को देखते हुए सरसों के 100 मॉडल फॉम्स कोटा और बूंदी जिले में शुरू किए गए जहां किसानों को खाद बीज एवं तकनीकी जानकारी के रूप में सहायता प्रदान की गई। वहीं बूंदी के नैनवा में तकनीकी जानकारी, प्रशिक्षण और विस्तार सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से फील्ड रिसोर्स सेंटर की स्थापना की गई है जहां किसान आकर सरसों की बुवाई से लेकर कटाई तक तकनीकी सहायता लेते हैं। किसानों को समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इन मॉडल फॉर्म्स में अन्य सामान्य खेतों के मुकाबले 23 प्रतिशत अधिक उत्पादन दर्ज किया गया।

संस्थान के कार्यकारी निदेशक डी.वी. मेहता ने बताया कि एसोसिएशन राष्ट्रीय स्तर पर तेल तिलहन उद्योग की शीर्ष संस्था है तथा किसानों एवं सरकार को समय-समय पर राय प्रदान करती है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष जहां राजस्थान में 32.00 लाख टन सरसों का उत्पादन हुआ वहीं इस वर्ष फसल बढ़ कर 32.50 लाख टन होने का अनुमान है। देश के प्रमुख प्रदेशों भी उत्पादन में 2.80 लाख टन अधिक उत्पादन होने का अनुमान है। गत वर्ष यह 75 लाख टन आंका गया था जो इस फसल में बढ़ कर 77.80 लाख टन होने की आशा है।

**ईश्वरीय प्रेरणा से.....**

( पृष्ठ तीन का शेष )

पर क्षमा करें मुझे तो आपका जीवन ही नाटकीयता से ओतप्रोत लगता है। डॉ. मेहता से भी मैं कई बार मिला। वे भी मुझे नाटकीय ही लगे और सामरजी के साथ मैं अन्त तक रहा। वे तो रंगमंच के ही आदमी थे। उनकी बातचीत, रहनी-सहनी में सब कहीं हर वक्त नाटकीयता की दक्षता मिलती थी। नाटक इनके जीवन का अहम हिस्सा ही बना रहा।

इस पर जन्नुभाई बोले, पर नाटक ने मुझे मुक्ति नहीं दी। सन् 1911 में मैं उदयपुर में जन्मा और 21 में प्रेमचन्दजी से मेरा सम्पर्क हो गया। मिला तो नहीं पर जब उन्होंने 'रंगभूमि' लिखा तो मैंने 'मातृभूमि' की रचना की। इसके साथ दुखद पक्ष यह रहा कि तत्कालीन मेवाड़ सरकार ने उसे जब्त कर जलवा दिया। मैंने इस घटना को प्रेमचन्दजी को लिख भेजी तो जवाब मिला कि मुकदमा लड़ो। उन्होंने दो बार इस उपन्यास को मुझसे फिर लिखवाया पर इन्टर मिडिएटर के बाद सन् 1933-34 में बनारस गया तो उनसे प्रतिदिन ही मेरा मिलना होता। उनका मेरे पर इतना प्रभाव रहा कि मैं तो उन्हें अपना साहित्यिक पिता ही मानता हूं। जन्नुभाई से मेरा आखिरी प्रश्न था भाषा के सम्बन्ध में। इन दिनों राजस्थानी का हो हल्ला अधिक सुनने में आ रहा है। इस भाषा की मान्यता के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं? वे बोले, अभी तो हिन्दी की मान्यता के भी लाले पड़ रहे हैं। गुजरात में कच्छी, सोरठी, उत्तरी गुजराती आदि छह भाषाओं का समन्वय कर आधुनिक गुजराती का स्वरूप दिया। यहां राजस्थान में तो सब बोलियों को मानकर लिखना पड़ेगा। मुझे तो पूरे राजस्थान की जनता के मन पर प्रभाव डालने वाला कोई लेखक नहीं दिखाई देता। मारवाड़ी को भाषा मानने का सत्य अधूरा है। इसे पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता और यों भी मान्यता मिल जाने से भी मुझे तो कुछ होना जाना नहीं लगता।

देश को यदि एक राष्ट्र मानते हैं तो हमारी राष्ट्रभाषा कहां है? हमने 1945 में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के साथ अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का अधिवेशन कर गांधीजी के हिन्दुस्तानी आन्दोलन के खिलाफ हिन्दी राष्ट्रभाषा और देवनागरी राष्ट्रलिपि का प्रस्ताव पास किया सो हम तो हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मानते हैं चाहे सौ, दो सौ, चार सौ वर्ष लगे, हिन्दी राष्ट्रभाषा बनकर रहेगी। हिन्दी के नाम पर कभी-कभी मुझे रोना आता है कि हमने इसके लिए क्या नहीं किया और क्या नहीं करना चाहते। वह समय चाहे मैं नहीं देख पाऊं किन्तु आयेगा जब हिन्दुस्तान में हिन्दी का बोलबाला होगा।

**उच्चादर्शी समाज विज्ञानी.....**

( पृष्ठ तीन का शेष )

मेरा परिचय डॉ. योगेश से भी रहा जब वे सिंधी बाजार स्थित फूटा दरवाजा के कोने पर के मकान में ऊपरी मंजिल में रहते थे। नंद चतुर्वेदी के साथ और अलग से भी मेरी उनसे भेंट-मैत्री रही। दो-चार बार तो कवि सम्मेलनों में भी हम साथ रहे। उनके लिखे दो-एक पोस्टकार्ड भी मेरे पास सुरक्षित हैं।

डॉ. नरेन्द्र व्यास से मेरा सम्पर्क बहुत पुराना रहा। उदयपुर आने के बाद तो उनसे संस्थान में भेंट होती रही। मैंने जब 1967 में गवरी पर शोधप्रबंध लिखा तो वे बहुत प्रसन्न ही नहीं हुए, मेरे संयोजन में टीआरआई में एक राष्ट्रीय कार्यशाला ही आयोजित कर डाली। 12 से 14 नवम्बर 1986 तक के इस यादगार आयोजन में गवरी प्रदर्शन के साथ गवरी कार्यशाला में रूपसिंह भील, स्वरूपसिंह चूण्डावत, पुरुषोत्तम मेनारिया, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. हरीश, नाथूबा, कोमल कोठारी, मंगल सक्सेना, भवाई नर्तक दयाराम भील के अलावा पूना से डॉ. मालती शर्मा, लखनऊ से डॉ. विद्याविन्दुसिंह, कलकत्ता से डॉ. शंकर सेन गुप्त जैसे इतिहास, समाज विज्ञानी, नृतत्वशास्त्री, लोककला मर्मज्ञ एवं अभिनेता-नायकों द्वारा जो विचार-विमर्श किया गया वह अद्‌भुत ही बना रहा।

मेरा यह सौभाग्य ही रहा कि डॉ. नरेन्द्र व्यास के अमृत महोत्सव पर जब मैंने 'आदिम गंध के अध्येता' नाम से अभिनन्दन ग्रंथ का संयोजन-सम्पादन किया तब डॉ. ब्रजराज चौहान (85) से मेरी सुखद भेंट हुई। उन्हें समारोह में आमंत्रित कर डॉ. व्यास ने आशीर्वाद लेकर समारोह की एक अन्यतम उपलब्धि-गौरव कहा।

मैंने भी डॉ. चौहान से पहली भेंट 18 फरवरी 2008 को उनके निवास पर यादगार बनाते हुए उनसे उदयपुर के आदिवासी जीवनधारा पर सामाजिक सरोकारों को लेकर संक्षिप्त भेंट की जिसका उपयोग डॉ. नरेन्द्र व्यास के अभिनन्दन ग्रंथ में भी किया गया। तब डॉ. चौहान इलाहाबाद के गोविन्द वल्लभ पंत समाज विज्ञान संस्थान के विजीटिंग फैलो थे। यहां प्रस्तुत है 'आदिवासी समाज अधिक विकसित' शीर्षक से वह भेंटवार्ता।

**आपकी दृष्टि में अलिखित का क्या महत्व है?**

जीवन का बहुत सा हिस्सा अलिखित है। हर चीज लिखित से नहीं चलती। इसको हमें समझना होगा। लिखित कानून होता है पर हर चीज कानून से नहीं चलती। अपने-अपने ढंग से जीने वाले समाजों ने अपनी समस्या का हल निकाला है। समाज विज्ञानी यह मानते हैं कि जितने प्राचीन समुदाय हैं वे अपनी परम्परा से चलते रहते हैं। वहां कानून की जरूरत क्यों हो, यह विचारणीय है।

**जीवन की प्रधानता किसमें है?**

पहले सामूहिक जीवन की प्रधानता थी। धीरे-धीरे व्यक्तिगत जीवन का प्राधान्य हो गया। नियम भी पहले सामूहिक अधिक थे। अब व्यक्तिगत अधिक हैं। गलती के लिए जो दंड विधान था वह सामूहिक था।

**मौताणा के संबंध में आपके क्या विचार हैं?**

मौताणा आधुनिक हिसाब से क्राईम है। उन लोगों ने जिसे सिविल माना, हमने उसे क्राईम मान लिया। सिविल रूप में वह समस्या है, क्राईम नहीं। जो हानि हुई है, क्षतिपूर्ति द्वारा वह संभव है। कानून की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। मौताणा में समझौता है। जिस किसी गलती की क्षतिपूर्ति संभव हो उस समाज को पिछड़ा कैसे कहेंगे? वह तो अधिक विकसित समाज है।

**अब समूह प्रधान नहीं रहा?**

यही तो चक्कर है। जो सामूहिक भोज होते थे, उनमें सबकी भागीदारी रहती थी। अब वह ठेके पर है। इससे सामूहिकता की भावना समाप्त हो गई। मुख्य समस्या ही यह है कि लोग व्यक्तिगत हित को आगे रखते हैं। जो आज भी सामूहिकता में जी रहे हैं, उन्हें सिखाने की बजाय हम उनसे सीख भी सकते हैं।

**समूह की कलाधर्मिता कैसे संरक्षित रहे?**

कलाधर्मिता के जो रूप हैं, हम उनमें हिस्सा लें। उन्हें मान्यता दें। उनके लिए सम्मानजनक आयोजन कर उनके प्रदर्शनों की सराहना करें। उनकी प्रतियोगिताएं आयोजित करें। उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें प्रतिष्ठित एवं पुरस्कृत करें। उनमें प्रचलित कहानी-किस्सों, गाथा-आख्यानों को लिपिबद्ध करें। उनके महत्व को समझाएं।

**और क्या करें?**

उन्हीं में से ऐसे लोग तैयार करें जो सशक्त होकर अपनी बात स्वयं लिखें। अपनी समस्या को स्वयं उजागर करें। आज हमें जा-जाकर पूछना पड़ता है। वे लिखेंगे, कहेंगे, उसका अधिक वजन होगा। ऐसे प्रयोग होने चाहिएं। सरकार प्रयोगशाला नहीं बना सकती। जो ऐसा काम कर रहे हैं, सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिए। इससे उनका आत्मविश्वास जाग्रत होगा।

**क्या इससे आंचलिकता की पैठ बनी रह सकेगी?**

आंचलिकता बनी रहे, उसके लिए कलाकार अपनी कला को विकसित करें। वे ही उसके विशेषज्ञ बनें। विशेषज्ञ अन्य भी होंगे तो होंगे। रामायण-महाभारत के व्यापक टीवी प्रसारण को हम क्या कहेंगे। वह रूपांतरण था। उससे कोई नुकसान हुआ हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसे हम बंद भी नहीं कर सकते। कुछ कलाकार होते हैं जो अपने से परे अच्छा काम करते हैं। ध्यान यह रखें कि अधकचरे लोग ऐसा न करें।

**सरकार की भागीदारी .....**

सरकार यह सब न करे। अब तक किया उसके परिणाम सामने हैं। सरकार स्वयं प्रयोगशाला बनने की बजाय विशेषज्ञों, विशेषज्ञ संस्थाओं पर छोड़ दे। असली कार्यकर्त्ता कमजोर न पड़ें। ठेकेदार पैदा न हों। सहकारिता तंत्र सक्षम बने। सबकुछ होने पर भी समस्या रहेगी तो उसके लिए झगड़ना पड़ेगा।

**भविष्य कथन का एक पक्ष यह भी शब्द रंजन कार्यालय में पीतल की एक कटोरी का स्पर्श कराते हुए विविध रंगी नगीनों से परीक्षण करते हुए भविष्यवाणी करता युवक।**

**भीख का आधार जीवन हिमालय सा भार**

## विश्व कीर्तिमानों में डॉ. धींग का दबदबा

अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का नाम विश्व कीर्तिमानों की चार पुस्तकों में दर्ज हुआ है। डॉ. धींग के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सबसे लम्बी हस्तलिखित कविता के लिए उन्हें यह गौरव मिला है। मुंबई की कवयित्री अणुव्रतसेवी डॉ. ललिता बी. जोगड़ ने डॉ. धींग पर 1311 पंक्तियों की कविता लिखी। इस कविता पर पिछले वर्ष उनका नाम विश्व कीर्तिमानों की स्वर्ण पुस्तक में दर्ज हुआ था। इसी कविता पर इस वर्ष उनका नाम असिस्ट विश्व कीर्तिमान, बंगाल विश्व कीर्तिमान एवं असम विश्व कीर्तिमान की पुस्तकों में भी दर्ज हुआ है।

**- विजया कोटेचा**

## दूरबीन द्वारा किडनी रिमूवल का सफल ऑपरेशन

**उदयपुर।** पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक महिला का किडनी रिमूवल का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि डूंगरपुर निवासी 58 वर्षीय महिला पिछले कुछ वर्षों से किडनी की समस्या से ग्रसित थी। वह उपचार कराने अहमदाबाद भी गई लेकिन वहां उपचार का खर्च अधिक होने से वह पुन: आ गई। गत दिनों वह पीआईएमएस पहुंची। जांच में पता चला कि मरीज का पहले सर्विक्स कैंसर का ऑपरेशन हो चुका है और वह रेडियेशन थेरेपी लेती है। इस पर पीआईएमएस में यूरोलॉजिस्ट डॉ. विकास गुप्ता ने दूरबीन विधि द्वारा उसकी किडनी को निकाला जिसे लेप्रोस्कॉपिक ने फ्रेरेक्टॉमी कहा जाता है। ऑपरेशन भामाशाह योजना के अन्तर्गत नि:शुल्क किया गया है। मरीज की हालत में सुधार है।

## माउंटेन ड्यू विलेज कनेक्ट प्रोग्राम चित्तौड़गढ़ में

**चित्तौडगढ़।** बेवेरेज ब्रैंड माउंटेन ड्यू देश के 4 राज्यों के 2000 गांवों में अपने विलेज कनेक्ट प्रोग्राम का तीसरा संस्करण पेश करने के लिए तैयार है। यह प्रोग्राम अगले 3 महीने जारी रहेगा। 2020 संस्करण से पहले दो संस्करणों को भारी सफलता मिली है और देशभर में इनसे करीब 11.5 लाख लोग जुड़े थे। माउंटेन ड्यू विलेज कनेक्ट का तीसरा संस्करण हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और बिहार के गांवों में आयोजित किया जा रहा है और इस दौरान माउंटेन ड्यू के 32 अलग-अलग ट्रक देश भर का दौरा करेंगे।

इस प्रोग्राम के तहत, देशभर के हर उस गांव में जहां विलेज कनेक्ट प्रोग्राम होगा उसमें कुश्ती, कबड्डी, बोरी दौड़ तथा रस्सा कस्सी जैसी स्पर्धाएं आयोजित की जा रही हैं। माउंटेन ड्यू विलेज कनेक्ट प्रोग्राम ने 12-13 मार्च को चित्तौडगढ़ की रावतभाटा और डुंगला तहसीलों के 2 गांवों का दौरा किया। नसीबपुरी, डायरेक्टर, माउंटेन ड्यू एंड एनर्जी, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि माउंटेन ड्यू की कोशिश हमेशा यही रही है कि हम देश के युवाओं को प्रेरित करें कि वह डर से न डरें, और डर के आगे बढकर कुछ बड़ा कर दिखायें। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम 2000 से ज्यादा गांवों के युवाओं को सम्मानित करते हैं।

# बचपन की वह होली

होली की याद करूं तो बचपन की ही होली बार-बार याद आती है। बचपन तो बचपन होता है। जो मस्ती और मनमौजी बचपन में होती है उसके बाद कभी हो नहीं सकती। होली भी जैसी तब मनाई जाती थी वैसी बाद में कभी मनती नहीं पाई गई। तब संध्या को होलीथड़े बहिनें सजधज कर आतीं। भाई को गोठ घूघरी देतीं। नाना प्रकार के होली के गीत गातीं। गोबर के जो आभूषणादि बनाकर लातीं वे सब बड़ी-बड़ी मालाओं के रूप में होली माता को पहनाई जातीं। मिट्टी के दो दीवलों को मिलाकर उन पर गोबर का लेप दे नारियल बनाया जाता। उस नारियल में फूली, भूंगड़े और पैसा रखा जाता। बजता हुआ वह नारियल भाई होली माता को चढ़ाता और उसमें का पैसा स्वयं रखता। इसमें बड़ा मजा आता।

होली को हम लोग खूब सजाते। बड़कुल्लों से, घासफूस से, फटे-पुराने कपड़े लत्तों से उसकी टहनियां भर देते। अंधेरा होने पर टोलियां बनाकर घर-घर चुपछुप जाते और चोर बन डरते घबराते किसी के बांस उठा लाते। किसी की बल्लियां उठा लाते। किसी के कंडे तो किसी की पूरी-अधूरी मूली-लकड़ी का गठ्ठर ही उठा लाते। कभी-कभी विशेष जोश में निसरनी, किंवाड़ तक उठा लाते और होली के चारों ओर ठीक से जमा देते। बड़ेरे लोग अच्छा सामान उठा लाने वाले को शाबाशी देते।



सामान उठा लाते उस समय बड़ा जोश-होश रहता तो मन में यह भी रहता कि इतना सारा काम आने वाला सामान घरों से चोरी के रूप में उठा लाकर कितना नुकसान किया जा रहा है पर सभी एक जैसे नहीं होते। जानकारी में आने पर कभी किसी असहाय एवं गरीब का सामान नहीं लाते। अनजान में ले जाने पर बाद में पता चलता तो पछतावा होता। धनवान और बेईमान को कभी नहीं छोड़ते।

वैसे चोरी का यह सामान लाते समय बड़ी प्रसन्नता होती। गर्व भी होता कि जैसे कोई लंका विजय कर आये हैं या कि किसी की कोई जागीर ही हाथ लग गई है। कभी किसी मकान-मालिक को पता लग जाता तो वह गालियों की बौछार कर देता। हम जान बचाई लाखों पाये, पसीना-पसीना हो भाग्य को भरोसा दे भागते। हमने इस दौरान लोगों के श्राप जरूर झेले पर मार कभी नहीं खाई। बड़ी हिम्मत और होशियारी, चतुराई, चालाकी के खेल थे ये। कच्चे-पच्चे कभी ऐसे काम नहीं करते।

कुछ लोग बड़बड़ाते, गालियां देते, छड़ी घुमाते होली ठाणे आते और आक्रोशी मुद्रा में बोलते- कौन थे वे जिन्होंने हमारे बाड़े का एक कंडा तक नहीं छोड़ा। बाहर टंगा सूपड़ा तक नहीं छोड़ा। मूसल तक ले गए बदमाश। खिड़की के किंवाड़ भी उठा लाये। पराई मांगी निसरनी ले आये। लाने वाले वहीं खड़े होते पर अपनी कोई भनक तक नहीं देते। वे जानते कि पता जो लग गया तो हाथ-पांव का लाइसेंस खराब कर देंगे।

ऐसी बात नहीं थी कि हम अपने घरों से कुछ नहीं लाते। कुछ लोग बुला-बुला कर राजी मन से लकड़ियां, कंडे आदि देते। होली के लिए कुछ न कुछ देने में उन्हें प्रसन्नता इसलिए भी होती कि होली की आग उन्हें भी लानी है। फिर उस मोहल्ले की होली अधिकाधिक प्रभावी हो, यह वे भी तो चाहते। कुछ लोग होलीथड़े ही कह देते कि हमारे घर में या बाड़े में या नोहरे में फलां जगह फलां चीज पड़ी है, उठा ले आना तब हम पूरी ईमानदारी बरतते और अन्य चीजें उठाकर नहीं लाते। अन्य होलियों से भी होड़ाहोड़ी चलती रहती। हम भी जा-जाकर देखते रहते कि अन्य होलियों के लिए कितनी सामग्री जुटाई जा रही है।

कुछ लोग बस्ती के बाहर जाते। गूंदी वृक्ष की छाल उतार लाते और उसके साथ होली के लगे कांटेदार सिंघाड़ों को मिलाकर चबाते और बार-बार अपनी लाल हुई जीभ को होठों पर फिराते ताकि होठ भी लाल हो जायें। तब पान से भी ज्यादा मजा इसमें आता था। दूसरे दिन धुलेण्डी को तो ऐसी घटना घटी कि मेरा रंग खेलना ही बंद हो गया। सुबह ही सुबह बिना कुछ खाये-पीये मैं अपनी पोल के बाहर चबूतरी पर आकर बैठ गया। साथ में अपनी बांस की पिचकारी और केवले के फूलों का रंग था।

थोड़ी ही देर में एक बूढ़ा आता दिखाई दिया। मैंने सोचा, इसे कौन रंग देगा और होली-धुलेण्डी खेलायेगा। अत: अपनी रंग भरी पिचकारी चला दी। ज्योंही मैंने पिचकारी चलाई कि उसने अपने हाथ की लाठी मेरे पर चलादी। वह लाठी मेरी कुहनी की हड्‌डी के ऐसी लगी कि सड़क पर वहीं गचा खा गिरा। मुझे उल्टी होने लग गई और काले-पीले दिखाई देने लगे। जैसे-तैसे मैं संभला और चुपचाप अपने घर में जा दुबका। किसी को इस वारदात का पता नहीं चलने दिया। कहता तो और पीटा जाता।

मुझे याद है, उस दिन मैंने कोई होली नहीं खेली, बल्कि उसके बाद भी रंग छांटने और होली खेलने में मेरी कोई रूचि नहीं रही। आज भी यही स्थिति बनी हुई है। जब कभी भी बचपन की यह घटना याद करता हूं तो मेरी कुहनी की हड्‌डी उसी तरह का दर्द देने लग जाती है जैसी तब लाठी खाकर दर्दे दिल हुई थी।

**-म. भा.**

# होली के बड़कुल्ले

**-कमलेश शर्मा 'कुक्कु'-**

वागड़ में होली पर रंग गुलाल खेलने व अन्य विविध रस्मों के साथ ही बालक-बालिकाओं द्वारा होली के ईंधन के रूप में गोबर के बड़कुल्ले बनाना भी एक प्रमुख प्राचीन परम्परा है। कहीं बड़कुल्या, कहीं गूलरी तो कहीं गादलिया के नाम से पुकारे जाने वाले इन बड़कुल्लों का निर्माण प्राय: बालक-बालिकाओं द्वारा ही किया जाता है।

होली आगमन के लगभग एक माह पूर्व से ही बच्चों द्वारा इन बड़कुल्लों के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रक्रिया में मुख्यत: गोबर, राख तथा पानी एकत्रित करना, गोबर से बड़कुल्ले बनाना, उनको सुखाना, मालाएं बनाना, जानवरों से रक्षा करना इत्यादि कार्य सम्मिलित होते हैं। इनके निर्माण में कोई बालक गोबर लाता है, कोई उसमें कुमकुम डालता है, कोई राख बिखेरता है, कोई आकृति को पहले जमीन पर चाक आदि से, उसके पश्चात गोबर के बनाता है।

सम्पूर्ण वागड़ में बनाए जाने वाले बड़कुल्लों का आकार विविधता लिए हुए होता है। ये बड़कुल्ले गोल, कुत्ते की जीभ, नारियल, मालपुआ, पीपल की पत्ती, ढोलक, सूरज, चन्द्रमा व वागड़ के प्रसिद्ध होली व्यंजन हुवारी फाफ्टा के आकार के बनाये जाते हैं। साथ ही घर की आवश्यकताओं की वस्तुओं के आकार भी इसमें प्रमुखता से सम्मिलित किये जाते हैं। बड़कुल्लों के निर्माण में बच्चे कुछ प्राचीन मान्यताओं को भी ध्यान में रखते हैं जैसे घर के पुरुषों की संख्या के बराबर नारियल का आकार, तो रोटी के आकार से बड़कुल्लों की संख्या बारह तथा चांद, सूरज, सुपारी, पान, जीभ व चकला बेलन के आकार के बड़कुल्ले एक-एक ही बनाये जाते हैं। सर्वाधिक आकार गोल ही होता है। इन विविधकारों के निर्माण के समय उनके मध्य छेद अवश्य कर दिया जाता है ताकि रस्सी पिरोकर इनकी माला बनाई जा सके।

अधिकाधिक संख्या में बड़कुल्ले बनाने की होड़ में लगे बालकों द्वारा यह निर्माण प्रक्रिया सामूहिक रूप से सम्पादित की जाती है। इसमें बच्चों का सामाजिक सद्‌भाव व सामंजस्य दर्शनीय होता है। बड़कुल्ले बन जाने के पश्चात इन्हें धूप में सुखाया जाता है। सूखने के बाद 50 से 100 बड़कुल्लों को नारियल के कुंचों से बनी रस्सी में पिरोकर मालाएं तैयार की जाती हैं जिन्हें घर की खूंटी पर लटका दिया जाता है। होलिका-दहन की पूर्व संध्या आते ही एक लम्बी लकड़ी में इन मालाओं को पिरोकर बाल समूह आनन्दित होता हुआ होली चौक पहुंचता है जहां इन बड़कुल्लों की मालाओं को होलिका पर चढ़ा दिया जाता है। कुछ जगह इन्हें चढ़ाने से पूर्व श्रीफल भी फोड़ा जाता है।

कहीं-कहीं महिलाओं द्वारा भी बड़कुल्लों का निर्माण किया जाता है। इसके लिए महिलाएं फाल्गुन शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन गोबर की पांच ढाल, एक तलवार, चन्द्रमा, सूरज, नारियल, आधी रोटी, एक होलिका माता और एक पान बनाती हैं।

यदि किसी परिवार में बेटी अथवा बेटे का उजमन होता हो तो गोबर की तेरह सुपारियां बनाई जाती हैं। इन्हें घर में सुख समृद्धि के वर्धन के लिए होलिका में डाला जाता है। इन्हीं बड़कुल्लों की एक माला महिलाओं द्वारा होली के सात-आठ दिन बाद अर्थात् चैत्र कृष्ण पक्ष के प्रथम सोमवार या बृहस्पतिवार को शीतला माता पूजन के पर्व बासेड़ा में माता पूजन की सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

होलिका दहन के समय ही वागड़ की एक अन्य परम्परा 'डांडा थामना' (जलते होलिका दंड को थामना) के तहत जिस व्यक्ति द्वारा होलिका दण्ड को थामा जाता है, उसे वहां उपस्थित लोग बड़कुल्ले मारकर उसके प्रयास को विफल करते हैं।

निसंदेह बड़कुल्ला बाल-सृजन का एक अनुपम उदाहरण है जिसके तहत बालकों को जहां एक ओर नवीन सृजन करने का सुख मिलता है तो दूसरी ओर होली जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार में अपने योगदान की सुखद अनुभूति भी प्राप्त होती है।

## भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़

भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़

(1)

पब्लिक मां सोवनजी नाचै
रसिया चंग दै थाळ।
फसिया करै धमाल चौकड़ी
घसिया बण्या बैहाळ।।
भागमभाग धड़ाधड़।
भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़।।

(2)

कुण करै पड़ताल सखी री
गोठीड़ा भंग छाणै।
होलीथड़े हुर्राटो मेलै
रंडवा खूंटी ताणै।।
ताबड़तोड़ तड़ातड़।
भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़।।

(3)

ढूंढ्‌या अळियां गळियां झांकै
बळमा फरै रसोड़ै।
राघा बाघा करै आरजु
कुण हंकड़ै कुण चौड़ै।।
हाबड़होड़ हड़ाहड़।
भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़।।

(4)

पचकार्‌यां सै ऊंधी वई गई
फूटा पड़ग्या ढोळ।
धूलकोट रौ धूलो वेईग्यौ
आ कंई पोळमपोळ।।
भांडण भोड़ भड़ाभड़।
भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़।।

(5)

गंध गांम री खैलत गुल्ली
खदबद करती थूली।
चणा भूंगड़ा फूली चाबौ
घटको गाजर मूली।।
गाळमगोळ गड़ागड़
भाई-भाई रै गैर्‌या धन्त्योपतड़।।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।